नारी का संबल

कला, साहित्य, संस्कृति की त्रैमासिकी

अप्रैल-जून 2014

वर्ष - 12, अंक 2

स्वामी, मुद्रक,
प्रकाशक एवं संपादक
शकुंतला तरार
मो. : 094255-25681

प्रबंध संपादक
संदीप कुमार
8982661011

टाईप सेटिंग
क्रियेटिव कम्प्यूटर, रायपुर

संपादकीय पता कार्यालय
एकता नगर, सेक्टर 2 32,
गुढ़ियारी, रायपुर, छत्तीसगढ़
पिन - 492 009
फोन : 0771-2592194
narikasambal.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख लेखक के निजी विचार हैं, इसमें सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

इस अंक में....

ISSN-2349-3321

लेख -	नौ नारी रत्न नरेन्द्र मोदी के		
		शकुंतला तरार	4-7
	रविन्द्रनाथ टैगोर		
		डॉ. गार्गीशरण मिश्र ''मराल''	8-10
	बौद्ध दर्शन और विश्व शान्ति		
		नवीशा अग्रवाल	11
	निर्मल वर्मा की कहानियों में आधुनिकता बोध		
		डॉ. शैलेश के. मेहता	12-14
	ग्वाल समाज की अनूठी लोक संस्कृति		
		रामचरण यादव	18-20
	एक संपूर्ण उपचार - प्रक्रिया है क्षमा		
		सीताराम गुप्ता	21-24
	शिवरानी देवी : संस्मरण		
		पं. नारायण शर्मा कौशिक	36-37
कहानी-	जुग जुग जियो मेरे मालिक		
		डॉ. रामशंकर चंचल	28-31
	इंतजार		
		मधु हातेकर	32-35
ग़ज़ल -	डॉ. राजकुमारी शर्मा ''राज़''		26-27
कविता -	बहुत दिनों के बाद, अहम्		
		डॉ. नलिनी पुरोहित	15
	प्यार मौन, वो दिन		
		रेणु राजवंशी गुप्ता	16-17
	मां	मनोज कुमार शुक्ल मनोज	25
	बचत	श्रीमती आशा मानव	37
पुस्तक समीक्षा			38-39
विविधा			40-43

E-mail : shakuntalatarar7@gmail.com

पत्रिका पंचायत ग्रामीण विकास 2005 के पंजीयन क्रं. 685 के अंतर्गत आत्मानन्द वाचनालय के लिए अनुमोदित।

पत्रिका लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा जिला पुस्तकालयों, माध्यमिक, उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं के लिए अनुमोदित। आदेश संदर्भ पत्र क्र. ग्रन्थ बी. 8 03 16

मूल्य रुपये बीस मात्र

संपादकीय

भगवान राम का ननिहाल छत्तीसगढ़ राममय भाजपा

हमारी छत्तीसगढ़ की माटी का जब भी जिक्र होता है हम सप्तऋषियों की धरा के रूप में सगर्व इसका स्मरण किया करते हैं। चूंकि हमारा मानस प्रभु भगवान श्री रामचंद्र जी के अति निकट है हर हिन्दुस्तानी के दिल में प्रभु विराजमान हैं। वे प्रभु जो मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये, जिन्होंने संसार को मर्यादा का पालन करने का मार्ग दिखाया ऐसे प्रभु श्री राम का ननिहाल यह छत्तीसगढ़ की पावन धरा ही तो है, जहाँ की धरती में माता कौसल्या ने जन्म लिया था। यहीं उनका लालन-पालन शिक्षा-दीक्षा हुई थी और यहीं से वे अयोध्या नरेश दशरथ को ब्याही गई थीं। आज भी छत्तीसगढ़ में रायपुर के चंदखुरी प्राचीन ''चंद्रपुरी ग्राम'' में माता कौसल्या का मंदिर विराजमान है। यह वही स्थान है जिसे माता का जन्म स्थान माना जाता है। वह माता जिन्होंने राम जैसे पुत्र को जन्म दिया और जिन्होंने आदर्श-मर्यादा, मान-सम्मान, रीति-नीति, वचन का पालन करना, त्याग-तपस्या, वीरता की शिक्षा से समस्त संसार को आल्पावित किया। आज न तो माता हैं न राम किन्तु उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग हैं जिन पर चलकर हमारा भारतीय मानस आदर्श कहलाता है। उसे व्यभिचार, अत्याचार, अनाचार से राम नाम ही बचाते हैं खैर आज वो जमाना नहीं रहा जहां राम जैसे आदर्श पुरुष और कौसल्या जैसी माता हो और हो भी नहीं सकते क्योंकि इस बीच में पूरे दो युगों की दूरी है। कहते हैं जब-जब धर्म का नाश होता है पृथ्वी पर अत्याचार बढ़ जाता है तब-तब धर्म की रक्षा करने के लिए भगवान का अवतरण होता है। आज भगवान स्वयं तो अवतरित नहीं हो सकते किन्तु अधिक न सही अपना कुछ अंश देकर ही अपना दूत बनाकर मानव रूप में धर्म की जय के लिए, अधर्म के नाश के लिए, प्राणियों में सद्‌भावना के लिए, गौमाता की रक्षा के लिए कहीं न कहीं जन्म लेते हैं। ऋषि संस्कृति, कृषि संस्कृति से सम्पन्न हमारे भारत के एक गरीब के घर में एक विलक्षण बालक ने जन्म लिया था और वह धरती है गुजरात की और वह बालक है नरेन्द्र मोदी। ''यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,अभ्युत्थाम् अधर्मस्य तदात्मनं सृजाम्यहम्।''

वे कहते हैं - मैं देश नहीं मिटने दूंगा मैं देश नहीं झुकने दूंगा सचमुच देश की चिंता है मोदी को इसलिए नहीं कि उन्होंने अन्य नेताओं की तरह बार-बार अपना चोला बदला है अवसर वादिता के चलते, बल्कि इसलिए कि वे एक भारतीय हैं। भारत माता के दर्द को महसूस करते हैं, भारत माता के बच्चों के भीतर ही भीतर चल रहे स्वाभिमान के विखण्डन के प्रति उनका दर्द है और उसी दर्द ने किशोरवस्था से युवावस्था की ओर बढ़े कदम को घर गृहस्थी की बेड़ियों से निकालकर प्रधानमंत्री

के उच्च आसन तक पहुँचाया है वे हिन्दू या मुस्लिम के नेता नहीं हैं बल्कि वे भारतवर्ष के सर्वोच्च सम्मानित सत्ता पर ध्रुवतारे की तरह चमकता सितारा बन गए हैं ।सूरज उन्हें अपनी आभा देता है तो चंद्रमा अपनी शीतलता प्रदान करता है, टिमटिमाते तारे उनके संगी साथी हैं जो उनके चारों ओर से सुरक्षा का आवरण बनकर चल रहे हैं ।

कश्मीर पर आतंकवाद चरम पर है तो नीचे बस्तर में माओवाद है, कश्मीर पर कब्जा करने की आतंकी चाल को वे जरूर नेस्तनाबूत कर देंगे ।हमारे सिर के ऊपर ही चीन बैठा है ।अरे हम जिस मान सरोवर को, जिस कैलाश पर्वत को जहाँ हमारे आराध्य शिव जी का धाम है वह कैसे और कब चीन का हो गया उस पर भी अब चिन्तन करने का समय आ गया है कि अब हमें हमारा मानसरोवर चाहिए हमारे कैलाशपति का कैलाश चाहिए क्योंकि जिस दिन नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली है उसी दिन से भारत एक बार फिर दुबारा विदेशी चंगुल से मुक्त हुआ है ।हम सगर्व कह सकते हैं कि हम आज़ाद भारत की हवा में सांसें ले रहे हैं ।

इंसान कोई भगवान नहीं कि उससे चमत्कार की आशा की जाए वह भी ऐसे समय में जब मानवता शर्मसार हो रही है व्यभिचार, अत्याचार, उत्पीड़न की इन्तिहा हो गई है बल्कि हमें आशान्वित होना होगा धैर्य के साथ ही अच्छे दिन का इन्तजार करना होगा अपनी नकरात्मक सोच और अराजकता को बढ़ावा देने वाली सोच का अंत करना होगा ।क्योंकि यहाँ राजनीति और साहित्य का अनोखा संगम हमें नज़र आया है मोदी जी में ।साहित्य से जिस व्यक्ति का सरोकार हो वह संवेदनशील होता है स्त्री के प्रति आदर, मां और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना, साफगोई, तभी वे कहते हैं मेरी पतंग कभी उलझती नहीं सचमुच उन्होंने पतंग के माध्यम से खुद को दुनिया की झंझटों से मुक्त रखा ताकि उनकी जीवन रूपी पतंग ना कभी उलझे न कभी कट सके ।

अतः राजनीति और साहित्य का अनोखा संगम है मोदी जी में वे राजनीति के सिद्धार्थ हैं और उनके खून की इक-इक बूंद में राम नाम है वे राम जिनका ननिहाल छत्तीसगढ़ है और आज जहाँ डॉ. रमन की सत्ता है विधान सभा चुनाव के नतीजों ने डॉ. रमन को बस्तर और सरगुजा को लेकर उद्वेलित किया था किन्तु लोकसभा के चुनाव ने 11 में से 10 सीटों पर जीत का जो परचम फहराया वो महसूस करने की बात है जिसे शब्दों से बयान नहीं किया जा सकता ।बधाई के पात्र हैं डॉ. रमन सिंह जिन्होने छत्तीसगढ़ के मान सम्मान की रक्षा की और मोदी जी को सत्तासीन करवाया।

मोदी जी में राजनीति और साहित्य का अनोखा संगम है इसलिए हम कह सकते हैं कि तीन ''र'' यानि राम, राजनीति, रमन से उनका नाता सदैव रहेगा। संसार में राम सबके दिलों में और छत्तीसगढ़ राम के ननिहाल के रूप में सदैव अंकित रहेगा युगों-युगों तक ।

नौ नारी रत्न नरेन्द्र मोदी के

अपने व्यक्तित्व, अपनी योग्यता, अपनी मुखरता से समाज में स्थान बनाने वाली महिलाओं को समाज में ऊँचा स्थान दिया जाता है तो कहीं-कहीं मर्यादा के नाम पर ऊंगलियाँ भी उठाई जाती रही हैं और आज भी यह बदस्तूर जारी है उसे हमेशा स्मरण कराया जाता है कि वह स्त्री है एक ऐसी स्त्री जो कमज़ोर है ।हमारे शास्त्रों में भी लिखा गया है कि महिला पहले पिता फिर पति फिर पुत्र के संरक्षण में रहे या फिर ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी किन्तु आज का समय इन सब बातों को नए सिरे से नकारता है कि स्त्री केवल ताड़न की अधिकारी ।स्त्री ही क्यों वो सब जिनका जिक्र शास्त्रों में है ।वर्तमान समय में स्त्री को मान, सम्मान, पद प्रतिष्ठा सभी कुछ तो मिल रहा है ।आज की स्त्री घर परिवार के अलावा बाकी सभी दायित्वों को भी बहुत अच्छे से निभा रही है ।नई ऊँचाईयों को छू रही है, नए प्रतिमान और नई नई प्रतिभाएँ गढ़ रही है ।वर्तमान में हमारे भारत में राजनीति के क्षेत्र में संसद में चुनकर आईं हैं ।उन महिलाओं का जिक्र मैं करना चाहूँगी जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ''नौ रत्न'' हैं इनमें से एक गुजरात प्रदेश की मुख्य मंत्री आनंदी बेन पटेल हैं ।

सुमित्रा महाजन- सर्वप्रथम सुमित्रा महाजन जो आठ बार से भाजपा की सांसद चुनी गई हैं और लोकसभा के अध्यक्ष के पद को सुशोभित कर रही हैं ।आप सुमित्रा ताई के नाम से लोकप्रिय, मृदुभाषी व्यक्तित्व की धनी हैं ।अपनी सरलता, स्वच्छ छवि, सौम्य व्यवहार के साथ ही आप लगातार विजयी होती रहीं ।1990 में मध्यप्रदेश में भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष और 1998 में महासचिव बनीं । पहले भी केन्द्र में भाजपा के शासन काल में आप मंत्री रह चुकी हैं ।

2005 में भाजपा महिला मोर्चा की प्रमुख थीं ।आप मानव संसाधन विकास समेत विभिन्न समितियों और मूल्य आधारित शिक्षा उपसमिति की सदस्य रही हैं ।इसके अलावा अनेक समितियों, उपसमितियों की आप सदस्य अध्यक्ष एवं निदेशक रही हैं 16 जून 2014 को आप लोक सभा की अध्यक्ष चुनी गई हैं ।

सुषमा स्वराज14 फरवरी 1952 को अम्बाला छावनी में जन्मीं 62 वर्षीया सुषमा स्वराज ने आपात काल के बाद दो बार हरियाणा विधानसभा का चुनाव जीता ।सुषमा जी के नाम कई रिकार्ड दर्ज हैं जो इन्होंने बनाया ।सर्वप्रथम तो दिल्ली की पहली मुख्यमंत्री रहीं, किसी भी राजनीतिक दल की पहली पार्टी प्रवक्ता, 25 वर्ष की उम्र में केबिनेट मंत्री बनने के रिकार्ड के साथ ही अब वर्तमान में पहली विदेश मंत्री भारत सरकार बनाई गई हैं ।बीए, एलएलबी, की शिक्षा प्राप्त सुषमा जी शुरू से ही महिलाओं की रोल मॉडल रही हैं प्रेरणा रही हैं ।आप सर्वश्रेष्ठ छात्रा के रूप में एस.डी. कालेज में सम्मानित की गईं साथ ही लगातार तीन वर्षों तक सर्वश्रेष्ठ कैडेट एन सी सी की चुनी गईं और तीन साल तक ही राज्य की श्रेष्ठ

वक्ता भी चुनी गईं थी ।आपके और आपके पति स्वराज कौशल जी को आप दोनों की उपलब्धियों के लिए लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में विशेष दम्पत्ति के रूप में दर्ज किया गया है ।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की नातिन 74 वर्षीया डॉ. नज़्माहेपतुल्ला का जन्म भोपाल में हुआ था ।आपने लम्बे समय तक कांग्रेस में अपनी सेवाएँ दीं किन्तु वैचारिक मतभेदों के चलते 2004 में आपने कांग्रेस का दामन छोड़ दिया और भारतीय जनता पार्टी में आ गईं ।राजनीति आपको विरासत में मिली अतः एम.एस.सी और हृदय रोग में पी.एच.डी. करने के पश्चात आप राजनीति में आ गईं ।आप 1985 से 86 और 1988 से 2007 तक राज्य सभा में रहीं और खास बात यह कि आप पूर्व उप सभापति रह चुकी हैं ।1980 से ही राज्य सभा की सदस्य रहीं 2004 से भाजपा में और अब आप अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री बनाई गई हैं ।आपकी सबसे बड़ी खासियत यह कि आप एक अच्छी लेखिका भी हैं इसका प्रमाण यह कि 21 फरवरी 2011 को इंप्रेशन्स के नाम से आपकी एक कविता संग्रह का लोकार्पण हुआ है ।

देश में धर्म की स्थापना के लिए साधु सन्तों का भी राजनीति में रहना श्रेयस्कर होता है इसी परिप्रेक्ष्य में साध्वी उमा श्री भारती का नाम सर्वोपरि है ।जी हां मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती युवावस्था से ही भारतीय जनता पार्टी से जुड़ गईं और 1984 मेंस र्वप्रथमअ ापनेल ोकसभच ुनावल ड़ाप रन्तुप राजितह ोग ईं 1989 के लोकसभा चुनाव में खजुराहो संसदीय क्षेत्र से सांसद चुनी गईं और 1991, 1996, 1998 तक बरकरार रहीं फिर 1999 में भोपाल सीट से सांसद चुनी गईं और वाजपेयी सरकार में मानव संसाधन विकास, पर्यटन युवा एवं खेल एवं कोयला और खदान जैसे विभागों में राज्य स्तरीय और कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया ।टीकमगढ़ जिले के डुंडा ग्राम में 3 मई 1959 को जन्मी उमा भारती अपनी बेबाकी के लिए प्रसिद्ध है उन्होंने रामजन्म भूमि आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई थी ।मगर कुछ मतभेदोंके च लतेब ीचम ेंभ ारतीयज नताप ार्टीस ेअ लगह ोकर भारतीय जन शक्ति पार्टी का गठन किया ।7 जून 2011 को भाजपा में उनकी पुनः वापसी हुई ।तब से वे गंगा बचाओ अभियान में जुटी हुई हैं और वर्तमान में झांसी लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से 16 वीं लोक सभा के लिए चुनी गई हैं और आपको भारत की जल संसाधन, नदी विकास और गंगा पुनरूद्धार मंत्री बनाया गया है ।

नेहरू गांधी परिवार की छोटी बहु मेनका गांधी का जन्म 26 अगस्त 1956 को दिल्ली में हुआ तथा आपकी शिक्ष दीक्षा भी दिल्ली के लारेन्स स्कूल, सनवर तथा लेडी श्रीराम कॉलेज नई दिल्ली में हुई ।

संजय गांधी की मृत्यु पश्चात 1982 में राजनीति में आईं । मेनका जी इसके पूर्व पत्रकार और एक पत्रिका की संपादक भी रह चुकी हैं इसी दौरान आपने कानून पर और पशुओं पर आधारित बहुत सारी पुस्तकें भी लिखी हैं आप पर्यावरणविद के रूप में जानी जाती हैं । 1992 में आपने पीपुल फॉर एनिमल्स नामक एक गैर सरकारी संगठन आरम्भ किया जो कि आज पूरे भारत में सक्रिय है । वर्तमान समय में भारत सरकार की महिला, बाल विकास मंत्री हैं ।

54 वर्षीय निर्मला सीतारामन का जन्म 18 अगस्त 1959 को तिरूचिरापल्ली, तमिलनाडु में हुआ । निर्मला जी सचमुच विशुद्ध भारतीय महिला हैं आपकी सादगी ही आपकी सबसे बड़ी खूबी है । सीता लक्ष्मी रामा स्वामी कॉलेज से स्नातक और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विषय में एम.फिल करने के पश्चात ''प्राइस वाटर हाउस'' वरिष्ठ प्रबंध शोध एवं विश्लेषण के तौर पर कार्य करने के बाद बीबीसी के लिए भी अपनी सेवाएँ दी हैं । आप हैदराबाद के प्रणव स्कूल के संस्थापकों में से एक हैं । आप 2003 से 2005 तक राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्या भी रह चुकी हैं और वर्तमान में भाजपा की प्रवक्ता होने के साथ ही वाणिज्य और उद्योग तथा वित्त एवं कार्पोरेट मामलों की (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री हैं ।

पंजाब के मुख्य मंत्री प्रकाश सिंह बादल की पुत्र वधु और पंजाब के ही उप मुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल की धर्मपत्नी हरसिमरत कौर बादल शिरोमणि अकाली दल से भटिंडा से चुनकर संसद में पहुंची 25 जुलाई 1966 को जन्मी हरसिमरत कौर भटिंडा लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से लगातार दूसरी बार चुनकर संसद में आई हैं और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगमंत्री के रूप में आपने अपना पदभार ग्रहण किया है ।

स्मृति ईरानी ने राजनीतिज्ञ के रूप में अपने कैरियर की शुरूआत 2003 से प्रारंभ किया जब उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की । 1998 में फेमिना मिस इंडिया सौदर्य प्रतियोगिता के फाइनल में पहुँची स्मृति का जन्म 23 मार्च 1976 को दिल्ली में हुआ था । अभिनय का क्षेत्र हो या राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में उन्हें अपार लोकप्रियता मिली है । टी वी सीरियल के जरिये वे देश के घर-घर में जानी जाने लगीं, वहीं 2010 में भाजपा महिला मोर्चा की कमान संभाली, 2011 में गुजरात से राज्यसभा के लिए सांसद चुनी गईं । वर्तमान लोकसभा चुनाव में इन्होंने राहुल गांधी और कुमार विश्वास को कड़ी टक्कर दी हालाकि वे चुनाव हार गईं किन्तु राज्य सभा की सदस्य होने के नाते आपको भारत सरकार में

मानव संसाधन मंत्री बनाया गया है ।इनके नाम सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, श्रेष्ठ व्यक्तित्व आदि के लिए पुरस्कारों और उपलब्धियों की लम्बी लिस्ट है जो 2001 से 2014 के मध्य दिए गए हैं ।

72 वर्षीय आनन्दी बेन पटेल गुजराज की पहली महिला मुख्य मंत्री हैं 1987 से आप भाजपा से जुड़ी हैं आप गुजरात राज्य की सड़क और भवन निर्माण, राजस्व, शहरी विकास और शहरी आवास, आपदा प्रबंधन और वित्त आदि विभागों की मंत्री रहकर अपनी सेवाएँ दे चुकी हैं ।जिस वक्त लकड़ियों को सकूल भी नहीं भेजा जाता था तब आपने विज्ञान विषय में पोस्ट ग्रेजुएट किया बाद में एम.एड. करके अहमदाबाद के मोहबीना कन्या विद्यालय में अध्यापन कार्य किया ।

आनन्दी बेन बहुत साहसी और निडर महिला हैं इसका प्रमाण यह है कि उन्होंने झील में कूदकर छात्रा की जान बचाई थी ।गुजरात में नरेन्द्र मोदी की सफलता में आनंदी बेन ने भी बड़ी भूमिका निभाई थी यही वजह है कि नरेन्द्र मोदी ने एक महिला मंत्री पर विश्वास जताया और उन्हें गुजरात राज्य का मुख्य मंत्री बना दिया ।दरअसल मोदी जानते हैं रत्न की पहचान करना ।वे सचमुच के अच्छे जौहरी हैं यह अलग बात है

कि कभी-कभी हमें चावल में कंकड़ भी मिल जाते हैं ।बहुत सारी उपलब्धियाँ एवं पुरस्कारों से नवाजी गई आनंदी बेन पटेलक ोह मारीह ार्दिकश ुभकामनाएँउ नकेक ार्यकालक ी सफलता के लिए ।वे भी नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री के नौ रत्नों में से एक हैं ।

भारत की नारियों के लिए आप नौ नारी रत्न सचमुच प्रेरणा पुंज हैं ।कठिन संघर्षों से निकलकर आप सबने जो मुकाम हासिल किया है संघर्षों में तपकर आप कुंदन बन गई हैं । वे महिलाएँ भी जो इस चुनाव में जीतकर आई हैं, जिस भी राजनीतिक दल की हों उन्हें हम दिल से धन्यवाद करना चाहते हैं कि आप सबका पुरुषार्थ हमें नए-नए क्षेत्र तलाश करने की प्रेरणा देता रहेगा, अपनी पहचान बनाने के लिए संबल प्रदान करेगा ।

इस तरह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 45 सदस्यीय मंत्री परिषद में कुल सात महिला मंत्री हैं जिनमें से छह कैबिनेट मंत्री और एक राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार हैं नारी का संबल परिवार की ओर से इन सातों महिला मंत्री और लोकसभा अध्यक्ष और आनंदीबेन पटेल को कोटिशः बधाई .....

निवेदन

साहित्य, कला, संस्कृति से गुम्फित हमारा भारत देश पूर्वांचल में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात, हिमालय से कन्याकुमारी तक विभिन्न भाषा-बोली, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा के होते हुए भी एकता और अखण्डता की मिसाल है ।

यहां की लोक बोलियां, परम्परायें, उसे अभिव्यक्ति देते कलाकार-क्या आप इन्हें पाठकों से रूबरू कराना चाहेंगे, जो नेपथ्य में हैं ।तो फिर देर किस बात की आज ही अपने मनोभावों को हम तक पहुंचाने के लिये आप तैयार हो जाइये ।

नारी का संबल को आपकी रचनाओं का इंतजार रहेगा ।आप प्रेषित करेंगे ना ?

संपादक

डॉ. गार्गीशरण मिश्र ''मराल''

साहित्य, कला और शिक्षा की त्रिवेणी : रविन्द्रनाथ टैगोर

विश्वकाव्य गीतांजलि के प्रणेता, नोबल पुरस्कार के प्रथम भारतीय विजेता, राष्ट्रगान के रचयिता, प्रकृति के पुजारी, उत्कृष्ट दार्शनिक, शांति निकेतन(विश्वभारती) विश्वविद्यालय के संस्थापक और विलक्षण कला साधक रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 6मई को कोलकाता में हुआ। आपके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर भी एक धर्मपरायण, समाज सुधारक, सुसंस्कृत विद्वान तथा ब्रह्म समाज के नेता थे।आपका परिवार संपूर्ण बंगाल में अपनी कला, संगीत प्रियता तथा समृद्धि के लिए विख्यात था।

आपकी संपूर्ण औपचारिक शिक्षा अपूर्ण और खण्डित रही। ओरिएंटल सेनेटरी स्कूल, नावेल स्कूल, बंगाल एकेडेमी, सेंट जेवियर स्कूल में आपका नाम तो लिखाया गया किन्तु वहां का भयोत्पादक जेल या अस्पताल का वातावरण आपको रास नहीं आया।फलतः आपकी शिक्षा की व्यवस्था घर पर ही बड़े भाई हेमेन्द्रनाथ टैगोर की देखरेख में संपन्न हुई। बंगला, अंग्रेजी, संस्कृत, संगीत, चित्रकला, गणित आदि विषयों को पढ़ाने के लिए अलग - अगल शिक्षक नियुक्त किये गये

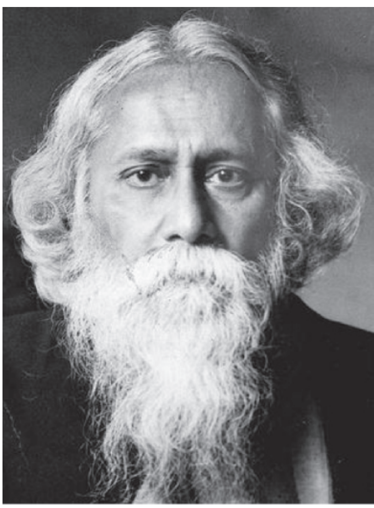

थे। बाद में आपको सन् 1879 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड के - ब्राइटन स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। किन्तु मन न लगने एवं घर की याद सताने के कारण आप एक साल के भीतर ही घर वापिस आ गये।सन् 1881 में आपको पुनः कानून की शिक्षा पानेके लिएइ ंग्लैंडभ ेजाग या।किन्तुब ादम ें विचार बदल जाने के कारण आप फिर वापिस आ गये।फिर भी अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और संवेदन शील हृदय के कारण आपने अपनी जन्मजात प्रतिभा को कुंठित नहीं होने दिया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले चार तत्व थे - 1. उन्नीसवीं सदी के महान बंगाली लेखक बंकिमचन्द्र चटर्जी- साहित्य लेखन की अभिरूचि, लेखन हेतु बंगाली भाषा का चयन और समाज- सुधार के लिए लेखन आदि में

राष्ट्रगीत का रचयिता देशभक्ति के भाव से रहित कैसे हो सकता है? उनकी राष्ट्रीयता की भावना गीतंजलि के निम्नांकित गीत में दर्शनीय है-

जहां हृदय भयरहित हो, सिर ऊंचा रहे, ज्ञान जहां मुक्त है, जहां धरती को छोटे- छोटे टुकड़ों में बांटकर दीवालें न खड़ी की गयी हों, वाक्य हृदय से निकलते हों – हे पिता (ईश्वर) उस स्वर्ग में भारत को जाग्रत करो।

गीतांजलि के ही एक अन्य गीत में वे भारतवासियों को संदेश देते हैं-

धर्मवीर बनो, कर्मवीर बनो, सिर उठाकर चलो, किसी से मत डरो, सारे भेदभाव भुलाकर आगे बढ़ो, तुम्हारे साथ भगवान है, तुम्हारी जय होगी।

बंकिमचन्द्र का प्रभाव उन पर पड़ा। 2 ब्रह्म समाज के विचारों का प्रभाव- यह प्रभाव रवीन्द्रनाथ टैगोर को अपने पिता से विरासत में मिला। रवीन्द्रनाथ के जीवन दर्शन के निर्माण में ब्रह्म समाज के विचारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। 3. घर के वातावरण का प्रभाव। कला और संगीत के प्रति लगाव रवीन्द्रनाथ टैगोर को पारिवारिक वातावरण की देन है। 4. राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव। इसने ही रवीन्द्रनाथ टैगोर में देशभक्ति की भावना भरी और राष्ट्रीयता लिखने को प्रेरित किया। कांग्रेस के राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था के विचार ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को शान्ति निकेतन या विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना होतु प्रेरित किया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ऋषियों की जीवन शैली को उत्कृष्ट मानते थे। इसीसे वे सादा जीवन उच्चविचार के जीवंत प्रतीक बने। रईस खानदान में जन्म लेने के बाद भी आप ऐश्वर्यशाली रहन सहन के आकर्षणों में नहीं रमे। इसी कारण उनका जीवन ऋषितुल्य था।

रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्य को मनोरंजन के साथ शिक्षा का भी माध्यम मानते थे। इसीसे उनके समस्त साहित्य में समाजिक सरोकार के दर्शन होते हैं। उन्होंने विपुल साहित्य की रचना की। उनके पचास से अधिक कहानी संग्रह, सौ से अधिक लघु कहानियां, बारह उपन्यास, तीस से अधिक नाटक, दो सौ के लगभग निबंध और दो हजार से अधिक कविताएं इसका प्रमाण हैं। उनका यह साहित्य उनके विचारों और भावों को अभिव्यक्ति देने में सफल हुआ। उसमें अपने युग के अंधविश्वासों, आडंबरों, दुराग्रहों तथा विदेशी शासन के अत्याचारों के विरूद्ध आक्रोश और सुधार की अपेक्षा दिखाई देतीहै ।य हांकु छन मूनेप्र स्तुत करना उपयुक्त होगा। 1. उनके विचार में ईश्वर मुनष्य का ही पूर्ण विकसित रूप है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त भी लगभग यही बात अपने पंचवटी खण्डकाव्य में कहते हैं- मैं मनुष्यता को सुरत्व की जननी भी कह सकता हूं। रवीन्द्रनाथ भी स्पष्ट कहते हैं- हमारा ईश्वर भी मनुष्य है। वे यही बात अन्यत्र भी कहते हैं- मेरा धर्म मनुष्य का धर्म है, जिसमें परम या अपरिमित की व्याख्या मानवता के अर्थों में की जाती है। अथवा वह जिसे परम और पूर्ण कहते हैं सर्वोच्च मनुष्य है। 2. वे भौतिकता और आध्यात्मिकता- विज्ञान और ज्ञान अथवा यथार्थ और आदर्श- के बीच समन्वय के समर्थक थे। इसी आधार पर उन्होंने पूर्व और पश्चिम के बीच समन्वय स्थापित किया। इसकी ओर संकेत करते हुए जवाहरलाल नेहरू ने कहा - उन्होंने पूर्व और पश्चिम के आदर्शों में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता की। रवीन्द्रनाथ एक ओर विज्ञान की महत्ता को स्वीकारते थे तो दूसरी ओर यह भी मानते थे कि ईश्वर उसकी पहुंच के बाहर है। उन्होंने स्पष्ट कहा- अपरिमित या सर्वोच्च व्यक्तित्व विज्ञान की पहुंच से परे है। 3 . रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार ईश्वर मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर में नहीं वरन् गरीबों के बीच रहता है। तभी तो वे स्पष्ट कहते हैं - ईश्वर को देखने के लिए किसी मंदिर, या गिरजाघर में जाने की जरूरत नहीं, क्योंकि ईश्वर वहां है जहां किसान कड़ी जमीनक ोज ोतर हाहै अ ोरस ड़कब नानेवाला पत्थरों को तोड़ रहा है। भारत के एक अन्य चिन्तक वियोगी हरि ने भी यही बात इन शब्दों में कही-

मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में।
तू था मुझे बुलाता तब दीन के वतन में।

उपरोक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर पूर्ण मानवतावादी थे। इसे प्रमाणित करते हुए वे स्वयं कहते हैं- यदि कोई ऐसा सत्य है, जो मानवता से पूर्णतः असंबद्ध है, तो हमारे लिए वह पूर्णतः अस्तित्वहीन है। जिस प्रकार वे भौतिकवादी नहीं थे उसी प्रकार वे पलायनवादी भी नहीं थे। इसे स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं- वैराग्य का मार्ग अपनाकर मैं मुक्ति की कामना नहीं करता। मैं असंख्य बंधनों में ही महानन्दमय मुक्ति

का स्वाद चखूंगा। 5. राष्ट्रगीत का रचयिता देशभक्ति के भाव से रहित कैसे हो सकता है? उनकी राष्ट्रीयता की भावना गीतंजलि के निम्नांकित गीत में दर्शनीय है- जहां हृदय भयरहित हो, सिर ऊंचा रहे, ज्ञान जहां मुक्त है, जहां धरती को छोटे- छोटे टुकड़ों में बांटकर दीवालें न खड़ी की गयी हों, वाक्य हृदय से निकलते हों --- हे पिता (ईश्वर) उस स्वर्ग में भारत को जाग्रत करो। गीतांजलि के ही एक अन्य गीत में वे भारतवासियों को संदेश देते हैं- धर्मवीर बनो, कर्मवीर बनो, सिर उठाकर चलो, किसी से मत डरो, सारे भेदभाव भुलाकर आगे बढ़ो, तुम्हारे साथ भगवान है, तुम्हारी जय होगी।

गीतांजलि की ही एक प्रसिद्ध कविता भारततीर्थ में वे कहते हैं कि जो भी एक बार भारत आया वह यहीं का होकर रह गया क्योंकि यह मानवता की संगमभूमि है- यहां आर्य, यहां द्रविड़ चीन शक, हूण दल पठान या मुगल एक देह में हुए लीन, पश्चिम ने खोला है द्वार, सब लाये वहां से उपहार, देंगे और लेंगे, मिलायेंगे और मिलेंगे, लौटेंगे नहीं। 6. विश्वकाव्य गीतांजलि का पर रवीन्द्रनाथ टैगोर को सन् 1913 में नोबल पुरस्कार मिला। यह तभी संभव हुआ जब गीतांजलि का अनुवाद बंगला भाषा से अंग्रेजी भाषा में स्वयं रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा किया गया। गीतांजलि के इस अंग्रेजी संस्करण की भूमिका अंग्रेजी प्रख्यात कवि डब्लू. बी. येट्स ने लिखी। गीतांजलि विश्व की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में गिनी जाती है। इसमें व्याप्त आध्यात्मिकताप ाठकक ेास ंसारक ीप्र वचनाओं क्षुद्रताओं से मुक्ति दिलाती है। येट्स स्वयं यह बात स्वीकार करते हुए कहते हैं- "I read Ravindranath everyday, to read one line of his is to forget all the troubles of the world." 'गीतांजलि' का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है।

'गीतांजलि' में ईश्वर के प्रति आस्था, समर्पण, उससे तादात्म्य, अभिमानशून्यता, प्रेमतत्व, प्रकति प्रेम, आत्मनिवेदन, राष्ट्रीयता की भावना, दृढ़ संकल्प आदि का समावेश है। उसकी संगीतबद्धता अनुपम है। आपकी 'एकला चालो रे' कविता में इनमें से अनेक भावदशाओं के दर्शन होते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर का समस्त साहित्य बंगला भाषा में लिखा गया किन्तु आज वह अनेक भाषाओं में उपलब्ध है। रवीन्द्रनाथ टैगोर अप्रतिम कला साधक थे। भारत में प्रचलित पंच ललित कलाओं में से तीन- चित्रकला, संगीतकला और काव्यकलाके त ोव ेस् वंयम र्मज्ञथ े ।क वितामें नोबल पुरस्कार पाने वाले विश्वकवि के रूप में उनकी ख्याति, संगीत एक नयी शैली रवीन्द्र संगीत-के जन्मदाता के रूप में उनकी उपलब्धि और फूलों के रंगों से चित्र बनाने वाले चित्रकार के रूप में उनकी प्रसिद्धि इसका प्रमाण है। शेष दो कलाओं- वास्तुकला और मूर्तिकला को आपने शान्ति निकेतन के पाठ्यक्रम में स्थान दिया। इसने देश को अनेक विश्वस्तर के मूर्तिकार तथा वास्तुकार दिये।

एक शिक्षाविद् के रूप में आपने 'शान्ति निकेतन' के नाम से एक अनूठे शिक्षा-संस्थान की स्थापना की। यही आज 'विश्वभारती विश्वविद्यालय' के रूप में सारे संसार में विख्यात है। यहाँ आध्यत्मिकता और विज्ञान का अद्भुत समन्वय दर्शनीय है। प्राकृतिक वातावरण में प्रकृति के माध्यम से शिक्षा देने का अनूठा आयोजन प्रशंसनीय है। राष्ट्रीयता और अंतर राष्ट्रीयता- देशप्रेम और विश्वबंधुत्व-के साथ-साथ पूर्व और पश्चिम -भारतीय और अंग्रेजी संस्कृति का समन्वय अप्रतिम है। रविन्द्रनाथ टैगोर बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी, समन्वयवादी दृष्टिकोण के समर्थक, विश्वबंधुत्व के पैरोकार, मानव मात्र के कल्याण के आकांक्षी तो थे ही साथ में वे साहित्य, कला और शिक्षा की जीवंत त्रिवेणी थे।

1436/ सरस्वती कालोनी,
चेरीताल वार्ड, जबलपुर (म.प्र.)

बौद्ध दर्शन और विश्व शान्ति

महात्मा गौतम बुद्ध के संदेश, सिद्धान्त और विचार श्रेष्ठ मानव के निर्माण का मन्त्र हैं। बौद्ध दर्शन में विश्व शान्ति, एकता और समन्वय के तत्व निहित हैं। हिंसा,आतंक, अपराध रोकने में बुद्ध की शिक्षायें पूरी तरह से सक्षम हैं। आज की भयावह परिस्थितियों में धरती की रक्षा बौद्ध दर्शन के सूत्रों के पालन से ही सम्भव है।

बुद्ध का अष्टांग मार्ग मनुष्य के कायाकल्प का अनुपम सिद्धान्त है। इससे मनुष्य निर्लिप्त भाव से समाज और विश्व के लिए कार्य करता है। त्याग,परोपकार, करूणा, कृतज्ञता का भाव सबमें व्याप्त होने पर सर्वत्र सुख शान्ति स्थापित होती है।

बौद्ध दर्शन में मानव समाज में समानता पर बल दिया गया है। बुद्ध ने हर विषमता की निन्दा की। उनके अनुसार जन्म से कोई ब्राह्मण अथवा शूद्र नहीं होता है। जन्म के आधार पर वर्णभेद अन्यायपूर्ण है। व्यक्ति कर्म से ही समाज में जाना जाता है। बौद्ध संघ में बिना किसी भेदभाव के इच्छुक व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। स्त्री-पुरूषों को भी समाज में दर्जा दिया जाता है।

महात्मा बुद्ध ने अहिंसा और नैतिक मूल्यों पर बहुत जोर दिया। जब- जब हिंसा बढ़ी है और नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है, विश्व में अशान्ति बढ़ी है। मनुष्य, मनुष्य का शत्रु बन गया है। सौहार्द्र कम हो गया है। देशों के बीच खाइयां गहरी हो गयी हैं। बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का प्रतिपादन करते हुए विश्व को दुःखों से पूर्ण बताया। उन्होंने इन दुःखों के लिए स्वयं मनुष्य की तृष्णाओं का उत्तरदायी बताया। मनुष्य इन तृष्णाओं के कारण ही अशान्ति को जन्म देता है। बुद्ध ने इन तृष्णाओं को मिटाने का उपदेश देकर समाज और विश्व के कल्याण का सूत्र प्रस्तुत किया। तृष्णाओं का अन्त ऐसा बीज है जिसके गर्भ में विश्व शान्ति की फसल छिपी है।

महत्मा बुद्ध ने मानव मात्र के प्रति और प्रेम करूणा सुख- शान्ति के लिए आवश्यक माना है। उन्होंने मानव को देव से ऊंचा स्थान दिया है। बुद्ध का मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य को निकट लाता है जो विश्व शान्ति के लिए आवश्यक है।

बौद्ध धर्म में कर्म को बहुत महत्व दिया गया है। श्रेष्ठ कर्म से मनुष्य श्रेष्ठ बनता है। कर्मशील व्यक्ति को हिंसा, अशांति औरअ पराधके लिएस मयन हीं रहता है। इससे समाज में शांति बनी रहती है। गौतम बुद्ध के सम्यकि विचारोंस े चित्तम ें श ांति और स्थिरता आती है। इससे अपूर्व आनंद की प्राप्ति होती है। मनुष्य को प्राप्त यही आनंद विश्व शांति का आधार बनता है। आतंकवाद और नक्सलवाद जैसे हिंसक कार्यों में संलग्न युवा शक्ति भटकाव के मार्ग पर चल कर निर्दोषों की हत्या ही नहीं कर रही है बल्कि अपना जीवन भी नष्ट कर रही है। आज बच्चे भी हिंसक खिलौनों को पसंद करते हुए दिखाई देते हैं। नशाखोरी ने युवा शक्ति को खोखला कर दिया है। व्यसन और वासना ने रिश्तों को भी कलंकित करने में कसर नहीं छोड़ी है। ऐसी भयावह परिस्थितियों में महात्मा बुद्ध के दर्शन को, भटक रही युवा पीढ़ी तक पहुंचाने की महती आवश्यकता है। तभी कष्टों से कराहती मानव जाति संरक्षित हो सकती है और विश्वशांति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

हिमदीप, राधापुरी हापुड़ (उप्र)

निर्मल वर्मा की कहानियों में आधुनिकता बोध

नई कहानी के पूर्व हिन्दी साहित्य जगत में गांवों एवं कस्बों की कहानियां लिखी जा रही थी, नई कहानी के कहानीकारों ने इस परंपरा को तोड़ा और उन्होंने महानगर की कहानियों का आरंभ किया। इस परंपरा के महत्वपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ कहानीकार निर्मल वर्मा हैं। डॉ. नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा को नई कहानी का प्रवर्तक कहानीकार घोषित किया है। वे लिखते हैं कि फकत सात कहानियों का संग्रह परिन्दे निर्मल वर्मा की ही पहली कृति नहीं है बल्कि जिसे हम नई कहानी कहना चाहते हैं उसकी भी पहली कृति है, पढ़ने पर सहसा विश्वास नहीं होता कि ये कहानियां उसी भाषा की है जिसमें अभी तक शहर, गांव, कस्बा और तिकोने प्रेम को ही लेकर कहानीकार जूझ रहे हैं। परिन्दे से ही शिकायत दूर हो जाती है कि हिन्दी कथा साहित्य अभी पुराने सामाजिक संघर्ष के स्थूल धरातल पर ही मार्क टाइम कर रहा है। समकालीनों में निर्मल पहले कहानीकार हैं, जिन्होंने इस दायरे को तोड़ा है, बल्कि छोड़ा है।

निर्मल वर्मा का समूचा साहित्य महानगरीय जीवन पर आधारित है, वैसे भी उनका जीवन दिल्ली, शिमला, लंदन, प्राप तथा चेकोस्लोविया जैसे महानगरों में व्यतीत हुआ है, निर्मल ने अपनी कहानियों में महानगरों की आधुनिक स्थिति को निरूपित किया है, जहां तक आधुनिकता बोध की अवधारणा का प्रश्न है, देखते हैं इसके बारे में स्वयं निर्मल क्या कहते हैं-

आधुनिकता (बोध) एक सिर्फ खाली शब्द नहीं है, आसपास की एक चीज को ऐसे अंदाज से देखने और पहचानने की प्रक्रिया है, जो हमसे पहले किसी पीढ़ी के पास नहीं थी, निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें उपलब्ध होता है। इसका आधुनिकता बोध शराब, सेक्स तथा पास

> निर्मल ने लिखा है-
> इतने बरसों बाद भी
> जेली को नहीं मालूम कि
> उस शाम शम्मीभाई ने
> कांपती हटनी
> से जेली के पैरों के पास
> क्या लिखा था, आज
> इतने लम्बे अर्से बाद
> समय की धूल इन शब्दों
> पर जम गई है। ...
> शम्मी भाई, वह और
> जेली तीनों एक-दूसरे
> से दूर दुनिया के
> अलग-अलग कोनों
> में चले गए हैं।

तक सीमित नहीं, जैसे अन्य कहानीकारों में दिखाई देता है, इन्होंने आधुनिकता बोध के अंतर्गत विचार का विरोध, अलेकापन, अजनबीपन, संबंधों में दरार तथा निराश जैसी मानसिक स्थितियों को भी निरूपित किया है। परिणाम स्वरूप हमें उनकी कहानियों में वे तथ्य, उस विशिष्ट शैली में दिखाई देते है, जो इनमें पूर्व की कहानियों में विद्यमान नहीं

थे। वास्तव में ये तथ्य ही इनको आधुनिक संदर्भों में एक महत्वपूर्ण साहित्यचेता के रूप में स्थापित करते हैं। यहां हम इनकी एक शोध आलेख की परिसीमा में चर्चा करने का प्रयास करेंगे।

निर्मल की कहानियों में ऐसे चरित्र विद्यमान हैं जो विवाह संस्था का विरोध करते हैं। वे उन्मुक्त जीवन जीने में विश्वास करते हैं, स्त्री और पुरुष परस्पर यौन-संबंध रखते हैं, बच्चे भी पैदा करते हैं और एक ही छत के नीचे रहते भी हैं, इनकी दो घर कहानी में भारतीय व्यक्ति विदेश जाता है, वह वहां बीमार होता है,एक नर्स उसकी सेवा करती है, और वही उसकी पत्नी भी बन जाती है। इसके दो बच्चे भी हैं, मगर इन्होंने विवाह नहीं किया, कहानी का यह चरित्र एक स्थान पर कहता है।-

आपको शायद नहीं मालूम... हम विवाहित नहीं थे, यह परिवार बिना विवाह के ही साथ रह रहा है।

वीक एंड कहानी की नायिका हर वीक एंड में एक शादीशुदा मर्द से मिलती है। उसे इसी में सुख प्राप्त होता है। वह स्पष्ट शब्दों में शादी की व्यर्थता दिखाते हुए कहती है- अगर मैं हमेशा उसके साथ रहती, एक ही घर में तो मैं कुछ भी न सीखती अर्थात वह इस संबंध को अपनी विशिष्ट उपलब्धि मानती है।

कहानीकार वर्मा जी के लिए आधुनिक व्यक्ति के मन का घनघोर अकेलापन उसके लेखन का केन्द्रिय तत्व रहा है, ये चरित्र चाहे घर में हो या भीड़ में, पार्क में हो या पब में, इसे अकेलेपन से मुक्ति पानेके ि लएछ टपटातेह ैं,य हअ केलापनक हीं दाम्पत्य जीवन के टूटने से उपजा है तो कहीं पात्र की अन्तर्मुखी प्रकृति के कारण, श्री प्रभात त्रिपाठी निर्मल की कहानियों के लिए अभिमत व्यक्त करते हैं कि-

रंग-गंध स्पर्श की एन्द्रिक गतियों से बढ़ती हुई, कहानी प्रायः मन के कोने में छिपे उस युग आर्तनाद को होने और लिखने की कोशिश करती है जिसे हम अपने घनघोर अकेलेपन में अपनी शिराओं में बहता हुआ महसूस करते हैं।

परिन्दे कहानी का संपूर्ण वस्तु गठन लतिका की स्मृति और अकेलेपन को लेकर किया गया है, मिस लतिका एक पहाड़ी कस्बे की स्कूल में टीचर है, वह अकेलेपन में इतना खोई है कि छुट्टियों में कहीं बाहर जाने के बजाय स्कूल में ही रहना पसंद करती है, ट्यूबर्ट के पूछने पर वह कहती है- अब यहां मुझे अच्छा लगता है- पहले साल अकेलापन कुछ अखरा था, अब आदी हो गई हूं। इस अकेलेपन में भी लतिका को सार्थकता लगती है।

धूप का एक टुकड़ा की नायिका भी अकेलापन स्वयं चुनती है, अपने पति से अलग होकर बाग में बैठ कर धूप के टुकड़े से अपने अकेलेपन को भरने का प्रयास करती है, उसका मानना है कि मुझे कभी-कभी यह सोचकर बड़ा अचरज होता है कि जो चीजें हमें अपनी जिन्दगी को पकड़ने में मदद देती हैं, वे चीजें हमारी पकड़ के बाहर हैं, तीसरा गवाह कहानी की नीरजा का अकेलापन अन्तर्मुखी मनोवृत्ति का परिणाम है, इसे स्पष्ट करते हुए रोहतगी कहता है- कहीं कोई अदृश्य दरवाजा था, जिसके पीछे नीरजा ने अपनी सूनी अकेली घड़ियों को जोड़-जोड़कर अपना एक अलग स्वप्न जगत बना लिया था।

आधुनिकता-बोध का एक महत्वपूर्ण लक्षण अजनबीपन है। इसका मूल में किसी पर विश्वास न रख पाने की मजबूरी है। आज किसी को प्राणों से अधिक चाहने की बात भ्रम जैसी लगती है, मनुष्य स्वकेन्द्री होता जा रहा है, यदि कोई उसे निःस्वार्थ चाहता है, तो भी उसे उसमें स्वार्थ की आशंका रहती है, किसी के पास समय नहीं है, इसलिए साथ-साथ रहते हुए भी लोग एक दूसरे के लिए अजनबी होते जा रहे हैं, इस अजनबीपन के कारण वे एक-दूसरे को अपना नहीं सकते।

दहलीज कहानी का शम्मीभाई जेली को कहता है, मगर एकरार नहीं करता, यह शम्मी की खुद की तय की हुई दहलीज है, जिसे वह पार नहीं करना चाहता।

निर्मल ने लिखा है- इतने बरसों बाद भी जेली

को नहीं मालूम कि उस शाम शम्मीभाई ने कांपती हटनी से जेली के पैरों के पास क्या लिखा था, आज इतने लम्बे अर्से बाद समय की धूल इन शब्दों पर जम गई है। ... शम्मी भाई, वह और जेली तीनों एक-दूसरे से दूर दुनिया के अलग-अलग कोनों में चले गए हैं।

डायरी का खेल भी इसी अजनबीपन को ध्वनित करती है, विदो की सगाई एक बार टूट चुकी है। बब्बू उसे चाहते हुए। बब्बू को आज भी यही लगता है कि हम दोनों एक-दूसरे के लिए अजनबी हैं- आज भी जब कभी शाम के धुंधलके मैं अपने कमरे में अकेला, ऊबा-सा, खिड़की से बाहर मकानों की छतों पर उतरती धूप को देखता हूं, तो एक क्षण के लिए ऐसा भ्रम हो जाता है कि समय के अन्तराल के परे कुछ ऐसा शेष रह गया है, जो बीता नहीं है... न कहीं गिरता है, न कहीं पकड़ में आता है।

वास्तव में इस चरित्र के माध्यम से वर्मा जी उसी अजनबीपन को निरुपायित करना चाहते हैं, जो आधुनिक बोध के रूप में उनकी कहानियों में व्याप्त है। महानगरों में वर्तमान में संबंधों का आंतरिक यथार्थ यही है कि वे अधिक से अधिक खोखले होते जाते हैं। हम भले ही खुद को भुलावे में रखते हुए आत्मीयता की तलाश कर रहे हों, लेकिन सच्चाई यही है कि रिश्तों में बिखराव आने लगा है, महानगरों में व्याप्त आधुनिकता का प्रभाव इतना गहरा है कि पारिवारिक संबंधों में भी उदासीनता का अनुभव किया जा सकता है।

बीच बहस में कहानी पारिवारिक विघटन की कथा है, परिवार का सबसे बड़ा और बूढ़ा आदमी बीमार होने के कारण अस्पताल में है, उसकी पत्नी उसी अस्पताल में नौकरी करती है, फिर भी उसे देखने तक नहीं जाती, उसकी बेटी कहती है,

मां कभी-कभी यह भी भूल जाती कि बरसों पहले भीतर का मरीज उनका पति रहा चुका है। अर्थात हालत यह है कि पति महाशय भीतर बोर्ड में भर्ती किए गए हैं और उसकी पत्नी उसी अस्पताल में काम कर रही है। लवर्स कहानी में प्रेम करने की कोशिश में अलग हुए पात्रों को दिखाया गया है, निन्दी अपने प्रेमी को पत्र के माध्यम से स्पष्ट शब्दों में ना कह देती है, दूसरी ओर प्रेमी है, जिसे ना सुनकर भी कुछ नहीं होता। उसके लिए जीवन वैसा का वैसा ही है।

आधुनिकता-बोध का एक महत्वपूर्ण सोपान निराशा है, जो वर्मा जी ने अपनी कहानी द्वारा चित्रित किया है, वैसे भी उनकी प्रायः सभी कहानियों में चरित्र निराशा में डूबे हुए हैं, उदाहरण तथा अंधेरे में कहानी के माध्यम से वे एक छोटे से बच्चे के मानस पर छाई हुई निराशा को सफल ढंग से व्यक्त करते हैं एक बच्चा बीमार होने के बाद मां के द्वारा उसकी उपेक्षा होते देखकर सोचता है कि-

कभी-कभी मुझे लगता है कि उन्हें मेरी बीमारी की विशेष चिन्ता नहीं है, मुझे लगता है कि वह यह भी भूल जाती है कि मैं बीमार हूं। दृष्टव्य है कि यह वैचारिकता स्वतंत्रता के पश्चात की है।

पिक्चर पोस्ट कार्ड कहानी का निकी एक बेरोजगार है, वह इतना निराश हो चुका है कि वह अपने दोस्तों से कह उठता है।

मुझसे यह सब कुछ नहीं होता, मैं शायद कुछ भी नहीं कर पाऊंगा, लगता है, यह आज के आधुनिकता बोध में घिरा हुआ हर युवक कह रहा हो। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि केवल शैली की दृष्टि से ही नहीं, कथा-गठन की दृष्टि से ही नहीं, वैचारिकता की दृष्टि से भी नई पौध के कहानीकारों में निर्मल वर्मा का अपना विशिष्ट स्थान है।

वे उन संवेदनाओं के आधार पर अपना कहानी लेखन करते हैं, जो हमें हिन्दी-कहानी साहित्य में पहली बार दिखाई देती है।

रीडर, हिन्दी भवन
सौराष्ट्र युनिवर्सिटी
राजकोट-5 गुजरात

बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
आज सुबह लगी सुहानी
बेलों में फूल
फूल में सुगंध
सुगंध लगी वही जानी पहचानी
बहुत दिनों के बाद...
आज सुबह लगी सुहानी
सूर्य का प्रकाश
मध्यम फैलता उजास
उजास की प्रीति करने लगी मनमानी
बहुत दिनों के बाद...
आज सुबह लगी सुहानी
पक्षियों का कलरव
कोयल की कुहूक
भौरों की गुंजन में लगी सरगम की वाणी
बहुत दिनों के बाद...आज सुबह लगी सुहानी
मस्जिद में नमाज
मन्दिर – गिरजे के घंटे की नाद
बदलने लगी मानो अपनी जगह पुरानी
बहुत दिनों के बाद...
आज सुबह लगी सुहानी
नैनों में अश्रु, अश्रु, में प्रेम
समुद्र...नदी...झरने...संग
प्रेम बहने लगा बन श्वेत पानी
बहुत दिनों के बाद...
आज सुबह लगी सुहानी।

अहम्

टूट जाती हैं दीवारें
रूठ जाती हैं बहारें
टूट जाता है दिल
सूनी हो जाती महफ़िल
टूट जाता है घर
पराया हो जाता शहर
टूट जाता है देश
पल–पल बढ़ता क्लेश
टूट जाता है इन्सान
हो जाती तेज़ उम्र की उड़ान
न टूटता तो सिर्फ एक वहम
हमसे बेहतर कौन
मैं और मेरा अहम्.....!

A-81,राधाकृष्ण पार्क,
नियर अकोटा गार्डन,
अकोटा वडोदरा (गुजरात)

रेणु राजवंशी गुप्ता की तीन कविताएं

प्यार मौन

शब्दों के अर्थ गौण हैं,
अर्थों की व्याख्या गौण,
शब्द अब मौन हैं,
प्यार अब मौन है।
बह रही है प्यार की नदी,
निश्चल - निश्चिन्त।
तटों पर उठते तूफान,
अब मौन हैं।
प्यार अब मौन है।
ना रहा अंधकार का भय,
ना है प्रकाश से सरोकार।
स्पर्श बता रहे हैं,
कि हम- तुम कौन हैं?
प्यार अब मौन है।

वो दिन

वो दिन है याद मुझे,
जब आंखों में पानी बहता था।
पानी की लहरों में कुछ,
सपने डोला करते थे।
वो दिन है याद मुझे,
ताजी रची मेहंदी की गरमी से,
हथेली पसीजा करती थीं।
हथेली में डूबी प्रियतम की,
आंखें डोला करती थीं।
वो दिन है याद मुझे,
साथ - साथ चलते कदम,
सहज लयबद्ध हो जाते थे।
अंगुलियों के सायास संघर्षण से,
तन -मन- विद्युत्मय हो जाते थे।
वो दिन है याद मुझे,
कहने को कुछ ना रहता,
मौन मुखरित हो जाते थे।
गूंगा मन कैसे बातें करता,
समझ नहीं पाते थे।
वो दिन है याद मुझे,
जब आंखों में पानी बहता था।

सागर - बूंद

जो चाहते हैं सागर उठाना,
सागर की लहरें गिनना,
सागर को आकाश से मिलाना,
वो करें आकाश - पाताल एक,
अपना अस्तित्व संवारती,
मैं तो खुश हूं एक बूंद बनकर।
बूंद में क्षमता है,
सागर का निर्माण करे।
एक सागर का दूसरे सागर से
मिलान करे।
क्या कभी सागर को,
बूंद रचते देखा है?
उसकी पीड़ा बांटने के लिए,
बूंद बनते देखा है?
बूंद-बूंद ही से तो सागर बनते में
सिमटते हैं।
सृष्टि के निर्माण की सहभागी,
मैं खुश हूं एक बूंद बनकर।
बूंद को अपने अस्तित्व का भान है।
जीवन है भंगुर,
इसकी पहचान है।
रचने की क्षमता है,
वो कर्मरत दिन- रात है।
सागर को है अपने
आकार पर अभिमान।
नहीं घटा है युगों- युगों से,
बन गया है जड़-आलस्य - प्रमाद।
पीड़ा नहीं झेली रचने की इसने,
फिर किस कर्म पर है इसे अभिमान।
जीने के लिए क्षण - क्षण चेतती,
मैं तो खुश हूं एक बूंद बनकर।
समय की झोली में अर्पण कर,
आगे बढ़ जाऊंगी अनंत पथ पार।
समा जाएगा मुझमें,
यह सागर अनंत अपार।
धरा के कोने - कोने पर,
होगा मेरा विस्तार।
परंतु क्या नाम था मेरा,
यह भी ना जान पाएगा
संसार।
अंत को अनंत से मिलाती,
खुश हूं मैं एक बूंद बनकर।

6070, Englet, DR,
West Chester,
OH, 45069 USA

- रामचरण यादव

ग्वाल समाज की अनूठी लोक संस्कृति

सदियों से स्थापित व प्रचलित पारस्परिक लोक गीत, लोक नृत्य, लोक संगीत और लोक जीवन की सहजता के दर्शन ग्वाल समाज में आज भी प्रत्यक्ष रूप से होते हैं। अपनी सांस्कृतिक विरासत और लोक रंग के विराट वैभव के लिए ग्वाल समाज की एक अलग पहचान वर्षों से कायम है। भाषा वेशभूषा, शैली और बुंदेली बोली में मौलिकता की दृष्टि से ग्वाल समाज की हर कला का अपना मुकाम है। माना कि उसकी सभ्यता और संस्कृति के कुछ उजले तो कुछ धुंधले पक्ष हैं परन्तु आज भी जन मानस के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजित ये अनूठी लोक संस्कृति अनमोल धरोहर के रूप में विद्यमान है।शादी-विवाह हो या कोई धार्मिक पर्व तीज त्यौहार हो या गांव की चौपाल सुख में हो या दुख में जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी प्रकार के माहौल में लोक संस्कृति की मौजूदगी अवश्य रहती है। इतिहास साक्षी है कि आदिकाल से अपनी विविधता और सहजता के सहारे समाज की प्राचीन लोक संस्कृति आज भी सुरक्षित एवं बेहद लोकप्रिय है। बुंदेली काव्य विद्याओं का प्रचलन आज सर्वत्र व्याप्त है।

> लोक संस्कृति से नई शाक्ति का संचार होता है। तभी तो इसके सानिध्य में अपार सुख शांति और खुशी अपने आप मिलती है। संस्कृति से ही हर व्यक्ति भली भांति सम्पन्न हो पाता है। वरना बिना संस्कार के मानव जीवन ही बेकार प्रतीत होता है। संस्कृति आने वाली पीढ़ी के समक्ष पौराणिक आदर्श प्रस्तुत करने में कुशल ही नहीं अपितु पूर्णतः सफल भी है इसमें प्रेम, आदर्श, मानवता, बंधुत्व की भावना कूट-कूटकर भरी है।

ग्वाल समाज में मुख्यतः कारस देव की गोठे, हरदौल की गाथा, ढोला, दीवारी, फाग, सावन, भुजलिया, होरी, राई, सजनई, ख्याल, लंहगी, बन्ना, चौमासा, कन्दैया, मतवारी रसिया, झूला गीत, शैला, बिनरी, आल्हा, बारहमासी, शैतामगीत राछरा, लंगुरिया, हिंडोला, लिला बिलवारी, बंधाई लेद बामुलिया, सुअटा, देवी गीत, झिंझोली, टेसू, नौरता अखती, स्वांग चौकड़िया, खड़ी फाग, सांझोली,प्र भाती,ग ेलघाट,ल ोकभजनअ ादिक ा प्रचलन सर्वाधिक है। कुछ पुरुष वर्ग के हैं तो कुछ माहिला वर्ग के लिए, अनेकों गीतों का भण्डार भरा पड़ा है। लोकगीत के साथ ही लोक नृत्यों का समावेश स्वतः ही मन को मोह लेता है। ग्वाल समाज की पाम्परिक वेशभूषा में धोती, कुरता फेंठा, गमछा, मिरजई, तोई, कमरकस, मोरपंखी, पिछोरा आदि प्रयोग में लाये जाते हैं। महिलाओं के पहनावे में लहंगा, चुनरी, चोली, घुघरिया, फरिया इत्यादि शामिल है। लोक वाद्यों में ढोलक, टिमकी, चंग, घेरा, खंजरी, ढप, मंजीरा नगड़िया, बांसुरी, खड़ताल एकतारा, लोटा, चिमटा, घुंघरू डंडा, झींका, लेझम, कीगड़ी, महुअर, अलगोझस, ढाक,

पपीरा, रमतुला चिकारा, कसाबरी, छड़ मटका, संटी, थाली, कांच, बीन, सारंगी, बरेठी आदि का उपयोग करते हैं। ग्वाल समाज की लोक संस्कृति का अवदान लोक मंच को सदियों से प्राप्त होता है। यह भी एक शाश्वत सत्य है कि अंधविश्वास रूढ़िवादिता के साथ ही प्राकृतिक प्रकोप समाज को विचलित करते हैं लेकिन फिर भी हर परिस्थिति का मुकाबला करते हुए ग्वाल समाज अपनी संस्कृति की विरासत को नहीं छोड़ता। दूध, दही, मक्खन खाना और मौज मनाना अर्थात गमों में भी मुस्कुराना ग्वालों का बुनियादी चरित्र है। उन्हें सावन-फागुन, होली, दीवाली हाट -बाजार, मेले-मड़ई, तीज- त्यौहार बहुत ही भाते हैं। वे सुख - दुख में सामूहिक रूप से शामिल होना शान समझते हैं।

ग्वाल बाल अपनी बोली व टोली कभी नहीं भूलते वे जहां भी जाते टोली के रूप में अर्थात समूह में ही जाते हैं। जहां भी जाते हैं अपनी पहचान छोड़कर आते हैं। भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का प्रहसन के रूप में हास्य व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत कर कई ग्वाल मण्डिलयां ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। शरद पूर्णिमा की रात में महारास का आयोजन होता है जिसमें बालक, वृद्ध, युवा, नर हो चाहे नारी सभी शामिल होकर आनंद उठाते हैं। रात्रि 2 बजे तक महारास के पश्चात् दूध का वितरण होता है। इसी प्रकार दीवाली के दूसरे दिन गोर्वधन पूजा का विशाल कार्यक्रम मनाया जाता है। मोहल्ले के पूरे लोग अपने अपने घर से टोकनी भर-भर कर गाय का गोबर लाते हैं। महिलाएं गीत गायन के साथ उस गोबर से एक बहुत बड़े अखाड़े की भांति चौतरा तैयार करती हैं। उसमें कंगूरे आदि बनाकर बहुत सुन्दर सजाती हैं। दूध, दही, लाई, बतासे खीर पूड़ी आदि से गोदन पूजा ढोल ढमाकों के साथ सम्पन्न होती है फिर उस गोबर के बने अखाड़े में छोटे बड़े सभी लोट लगाते हैं। छोटे बच्चों को उस पर लिटाते हैं ताकि उसे भगवान का आशीर्वाद प्राप्त हो जाये और वह जीवन भर भला चंगा बना रहे। ग्यारस के दिन उसी गोबर को थोड़ा-थोड़ा सभी ले जाकर अपने गाय के कोठे में डालते हैं। उनकी मान्यता है कि इससे पशुओं को होने वाली बीमारी नष्ट हो जाती है।

ग्वाल समाज की अनूठी संस्कृति में आनंद की नई दिशाएं खोल देने की क्षमता है। आनंद विभोर होकर मस्ती में जब ग्वाल बाल साज बाज के साथ झूमते हुए गाते और नाचते हैं तब पशु - पक्षी, जीव, जन्तु व्यक्ति और प्रकृति सभी खुशी में तल्लीन दिखाई पड़ते हैं। बदलते परिवेश के साथ समझौता करने को विवश लोक संस्कृति भले ही आज

अपाहिज सी नजर आती है पर नित्य नवीन आर्कषण से सुसज्जित फलीभूत होकर आज भी पूर्णतः सफल और सुरक्षित है। अनेकों विशेषता के कारण लोक संस्कृति निरन्तर गतिशील, चिर नूतन और सनातन है। इसी संस्कृति ने समाज को सुदृढ़ और समृद्ध बनाने का प्रयास किया है। मानव जीवन को सदैव खुशहाल बनाये रखने में ग्वाल समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जैसी भी स्थिति हो हर हाल में खुश रहना ही जिन्दगी का ध्येय है। लोक संस्कृति तो लोक मानव का दर्पण है जिसमें अतीत से भविष्य तक का प्रतिबिंब स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इसमें समाज के

उत्थान, पतन हर्ष-विषाद का चित्रण तो कभी सुख समृद्धि की लहरें,जीवन संघर्ष की कटुताएं। सामाजिक बंधनों एवं रीति-रिवाजों का चक्र परिलक्षित होता तो कभी विरह के आंसू तो कभी मिलन की मुस्कान दिखाई देती है। समाज के समूचे वातावरण को अपने में सिमटकर रखने वाली लोक संस्कृति के अंतर्गत समाहित लोकगीतों में भी माटी की गंध,तीज त्यौहारों का आनंद

मानवीय मूल्यों का संरक्षण प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन तथा देश प्रेम की भावना का मिश्रण स्पष्ट झलकता है। वैसे भी ग्वाल समाज की लोक शैली मिठास भरी और सहज ही मन को आकर्षित करती है। यह इतनी रसों से भरी है कि गोरस भी फीका पड़ने लगता है।ग्वालों के संग मस्ती में झूमते नाचते गाते सभी सराबोर हो जाते हैं।

लोक संस्कृति से नई शाक्ति का संचार होता है। तभी तो इसके सानिध्य में अपार सुख शांति और खुशी अपने आप मिलती है। संस्कृति से ही हर व्यक्ति भली भांति सम्पन्न हो पाता है। वरना बिना संस्कार के मानव जीवन ही बेकार प्रतीत होता है। संस्कृति आने वाली पीढ़ी के समक्ष पौराणिक आदर्श प्रस्तुत करने में कुशल ही नहीं अपितु पूर्णतः सफल भी है इसमें प्रेम, आदर्श, मानवता, बंधुत्व की भावना कूट-कूटकर भरी है। सच पूछो तो यही संस्कृति अपनी सरलता और मधुरता के बल पर विचलित मन को धैर्य प्रदान करती है। बहुपयोगी लोक संस्कृति की महिमा में जितना कहा जाये कम ही होगा फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि यह संजीवनी की भांति मृतकों में प्राण फूंक सकती है। संस्कृति जीवन जीने की कला सिखाती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इस आधुनिक युग में भी इसका संरक्षण व प्रचलन जारी रहे। इतनी अमूल्य सौगात जो हमें विरासत में मिली उसकी रक्षा कैसे की जाये? लोक संस्कृति की सुरक्षा और सफलता का दायित्व अब आने वाली पीढ़ी के कंधों पर है। इसका ये मतबल नहीं कि हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं बल्कि हम तो यही कहेंगे कि समाज का हर वर्ग सचेत रहकर इस ओर अवश्य ध्यान दे कि लोक संस्कृति का कहीं कोई ह्रास तो नही हो रहा है। अगर कहीं भी इस पर प्रहार होता दिखाई दे तो सामूहिक रूप से उसके विरूद्ध ठोस कदम उठाये जायें। ग्वाल समाज की इस अनमोल धरोहर को प्राणों से ज्यादा प्रिय समझकर संभाल रखने की आवश्यकता है।नई सदी में नित्य नई उमंग के साथ लोक संस्कृति का प्रचार प्रसार व आदान-प्रदान किया जाये तो निश्चित ही यह और अधिक विकसित होगी।

सदर बाजार बैतूल(म.प्र.)

एक संपूर्ण उपचार - प्रक्रिया है क्षमा

दान के अनेक रूप हैं अनेक श्रेणियां हैं। धनदान, ज्ञानदान, श्रमदान, रक्तदान, अंगदान, दृष्टिदान, देहदान, अस्थिदान, आत्मदान, कन्यादान, गोदान, भूमिदान, ग्रामदान, गृहदान, स्वर्णदान, अन्नदान, वस्त्रदान, प्राणदान, अभयदान, पुस्तकदान, औषधिदान, शांतिदान आदि अनेक प्रकार के दानों का उल्लेख मिलता है। उद्देश्य विशेष की दृष्टि से नित्य, नौमित्तिक और काम्य तीन प्रकार के दान माने गए है। गीता में सात्विक, राजसिक और तामसिक तीन प्रकार की वृत्तियों के अनुसार ही तीन प्रकार के दान माने गए हैं। सार्थक अथवा निरर्थक, प्रामाणिक अथवा अप्रामाणिक, प्रतिश्रुत अथवा प्रदत्त दोनों का वर्णन भी विभिन्न ग्रंथों में मिलता है। दान किसी भी प्रकार का हो दान का अर्थ है देना। यह कोई भौतिक जगत की वस्तु भी हो सकती है अथवा एक मानसिक अवस्था भी। ऐसी ही एक मानसिक अवस्था है क्षमादान। किसी को क्षमा करना भी एक बहुत बड़ा दान है। इसमें लेन - देन जैसी कोई क्रिया घटित नहीं फिर भी यह दान की श्रेणी में ही आता है।

> शत्रु और मित्र शब्दों का अस्तित्व वास्तव में क्षमा के अभाव में ही है। जहां क्षमा है वहां शत्रुता अथवा द्वेष का क्या काम। क्षमा दुश्मनी का विनाश कर दोस्ती का विस्तार करती है। कहा गया है कि दान के गर्भ में ही निहित है प्राप्ति का मूल। क्षमादान भी इसका अपवाद नहीं। आप इस दान को देकर देखिए आपको कितनी प्राप्ति हाती है। किन - किन रूपों में प्राप्ति होती है। लेकिन क्षमा करना सीखें। आप हृदय से क्षमा मांगें और क्षमा करें। ऊपरी तौर पर क्षमादान या क्षमायाचान से कोई लाभ नहीं होता। यह कोई भौतिक वस्तु तो है नहीं कि देने से बात बन जाएगी। यह विशुद्ध रूप में एक मानसिक क्रिया है अतः संपूर्ण हृदय से क्षमा करें या क्षमा मांगें।

कहने को तो यह एक छोटा सा शब्द है क्षमा लेकिन इसका प्रभाव छोटा नहीं होता। किसी को क्षमा करने का अर्थ है उसके प्रति अपने मनोभावों में परिवर्तन। जब भी किसी के प्रति शिकायत, क्रोध, विद्वेष, ईर्ष्या या विषमता का भाव होता है तो जिसके मन में ये भाव होते हैं वह इन घातक मनोभावों की पीड़ा के प्रभाव को भुगतने के लिए विवश होता है। किसी को क्षमा करने के पश्चात् ये घातक मनोभाव भी समाप्त हो जाते हैं अतः क्षमा करने वाला व्यक्ति अत्यंत घातक विकारों की पीड़ा से मुक्त हो जाता है। क्रोध, घृणा, वैमनस्य आदि मनोभावों के स्थान पर शांति,प्रेम,मित्रता,सहयोग,सौहार्द्र,सौमनस्य आदि भावों का उदय होने से व्यक्ति निरर्थक तनाव और दुश्चिंताओं से बच जाता है।

तनाव आज के युग का एक सर्वाधिक घातक रोग है। तनावमुक्त व्यक्ति की स्वाभाविक रोगोपचारक शक्ति बनी रहती है। तनावयुक्त व्यक्ति का इम्यून सिस्टम धीरे - धीरे कमजोर होकर उसे रोगी बना डालता है। किसी को क्षमा करने का सीधा सा अर्थ है स्वयं को स्वस्थ एवं नीरोग बनाए रखना। अनेक अध्ययन एवं वैज्ञानिक शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि जो व्यक्ति जितना अधिक क्षमाशील होता है वह उतना ही अधिक स्वस्थ होता है और रोगी शीघ्र रोगमुक्त हो जाता है। हमारे संबंधों मेंः चाहे वे व्यक्तिगत या पारिवारिक हों अथवा सामाजिक,

राजनीतिक, व्यावसायिक या आर्थिकः सुधार न होने या न सुधरने का प्रमुख कारण है क्षमा का अभाव। बिगड़े संबंधों में सुधार का अर्थ है कहीं न कहीं क्षमा भाव ने अपना कार्य किया है। कहीं न कहीं से क्षमा की शुरुआत हुई है। संबंधों में सुधार का अर्थ है उपचार। सामाजिक अथवा आर्थिक समस्याओं का उपचार ही नहीं अपितु मानसिक एवं भौतिक व्याधियों का उपचार भी। सभी प्रकार के उपचार अन्ततः भौतिक व्याधियों के उपचार में ही सहायक होते हैं। इस प्रकार क्षमा वास्तव में उपचार का साधन है। जिसने क्षमा करना सीख लिया उसने अनेक व्याधियों पर नियंत्रण करना भी सीख लिया। रोगमुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीने के लिए एक वरदान है क्षमा।

प्रश्न उठता है कि क्या क्षमा देना ही महत्वपूर्ण है क्षमा मांगना नहीं? वस्तुतः क्षमा देना और क्षमा मांगना दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। क्षमा मांगने का अर्थ है अपने मिथ्या अहंकार से मुक्त होना। जो व्यक्ति जितना अधिक अहंकारी होता है वह क्षमा से उतना ही दूर होता है। न क्षमा मांग सकता है और न क्षमा कर सकता है। क्षमा मांगने वाले और करने वाले दोनों के अहंकार का नाश होना निश्चित है। अहंकार स्वयं में एक विकट व्याधि है। क्षमा द्वारा इस विकट व्याधि से मुक्त होकर स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

पर क्या क्षमा मांगना और क्षमा करना इतना सरल है? वस्तुतः यह इतना आसान नहीं लेकिन असंभव तो बिल्कुल नहीं। क्षमा मांगने वाला और क्षमा करने वाला दोनों ही बड़े माने जाते हैं। जिसने क्षमा देना सीख लिया वह बहुत बड़ा वीर है। क्षमा वीरस्य भूषणम्। बहादुर ही क्षमा नामक आभूषण को धारण कर सकते हैं। यहां बहादुरी से तात्पर्य बाहुबल से नहीं है अपितु मन की शक्ति से है। सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण से है। जो अपने मन को वश में कर अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर सकता है वही आत्मज्ञान को प्राप्त हो सकता है। आत्मज्ञान प्राप्त होने पर ही व्यक्ति मिथ्या अहंकार और दूसरे घातक मनोभावों से मुक्त होकर दूसरों को क्षमा कर सकता है, अथवा क्षमा - याचना कर सकता है। वस्तुतः क्षमा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को आत्मज्ञान का अवसर प्रदान करती है। क्षमा द्वारा सही अर्थों में व्यक्ति का आध्यात्मिक उत्थान संभव है।

आम लोगों की सोच है कि क्षमा कमजोरी का प्रतीक है और क्रोध और हिंसा में ताकत दिखलाई पड़ती है लेकिन वास्तविक ताकत वहीं है जहां क्षमा का भाव है। बदले की भावना या घृणा हिंसा उत्पन्न करती है जबकि क्षमा में निहित है अहिंसा का भाव। अहिंसा द्वारा ही सात्विक व स्थायी परिवर्तन संभव है। क्षमा द्वारा अहिंसा का अनुपालन होता है जो योगमय जीवन का प्रारंभ है। योग के आठ अंगों में पहला अंग है यम और यम का पहला सूत्र है अहिंसा। क्षमा योग का ही प्रारंभ नहीं अपितु धर्म का भी प्रमुख लक्षण है। मनुस्मृति के अनुसारः

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।
क्षमा धर्म के दस लक्षणों में से एक है।

भगवान बाहुबली या महावीर इसलिए बाहुबली या महावीर कहलाए क्योंकि उन्होंने क्षमा को जीवन का अनिवार्य तत्व स्वीकार कर जीवन में अपनाया। उनके बतलाए हुए मार्ग को धर्म कहा गया क्योंकि इसमें क्षमा की प्रधानता थी। सम्राट अशोक इसलिए महान नहीं कहलाए कि उन्होंने कलिंगयुद्ध में विजय प्राप्त की अपितु ऐसे धर्म की शरण में चल गए जिसमें क्षमा की प्रधानता थी। ईसा मसीह ने उन लोगों को भी क्षमा कर दिया जिन्होंने ईसा मसीह को सूली पर टांग दिया और ईसा मसीह प्रभु बन गए। उनके द्वारा दिखलाया गया मार्ग एक नया धर्म बन गया। क्षमा के अभाव में न कोई व्यक्ति ही वीर है और न कोई धर्म ही पूर्ण है।

हजरत मुहम्मद(सलिल्लाहु अलैहि व सल्लम) साहब फर्माते हैं कि कुश्ती में सामने वाले को पछाड़ने वाला बलशाली नहीं होता अपितु जो अपने क्रोध पर नियंत्रण कर लें, क्षमा ही तो है। क्रोध पर काबू पाने वाला हो या क्षमा कर देने वाला सही अर्थों में बलशाली है। यही नहीं किसी भी नकारात्मक भाव पर विजय प्राप्त करने वाला सबसे बड़ा बलशाली है। क्षमा करना एक सकारात्मक भाव है।

शत्रु और मित्र शब्दों का अस्तित्व वास्तव में क्षमा के अभाव में ही है। जहां क्षमा है वहां शत्रुता अथवा द्वेष का क्या काम। क्षमा दुश्मनी का विनाश कर दोस्ती का विस्तार करती है। कहा गया है कि दान के गर्भ में ही निहित है प्राप्ति का मूल। क्षमादान भी इसका अपवाद नहीं। आप इस दान को देकर देखिए आपको कितनी प्राप्ति हाती है। किन - किन रूपों में प्राप्ति होती है। लेकिन क्षमा करना सीखें। आप हृदय से क्षमा मांगें और क्षमा करें। ऊपरी तौर पर क्षमादान या क्षमायाचान से कोई लाभ नहीं होता। यह कोई भौतिक वस्तु तो है नहीं कि देने से बात बन जाएगी। यह विशुद्ध रूप में एक मानसिक क्रिया है अतः संपूर्ण हृदय से क्षमा करें या क्षमा मांगें।

मात्र शाब्दिक क्षमा से लाभ नहीं होता। लेकिन शुरूआत तो करें। पहले ऊपरी तौर से ही शुरू करें। साथ में मन में एक संकल्प लें कि मैं अपनी हर जानी - अनजानी गलती के लिए क्षमाप्रार्थी हूं और सबको हृदय से क्षमा प्रदान करता हूं। जैन धर्म में तो इसे एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। धीरे - धीरे ये आपका स्वभाव बन जाएगा और आपके आचरण का एक हिस्सा हो जाएगा। क्षमा द्वारा आप अपेक्षाकृत अधिक मुक्त जीवन जी सकेंगे।

एक चीज और महत्वपूर्ण है। आप किसी को उसकी गलती का अहसास कराकर उसे सुधारने के लिए ऊपर से भले ही क्षमा न करें लेकिन मन से अवश्य करें। हर कार्य की एक सीमा भी होती है। किसी की गलती के लिए उसको एक निश्चित समय सीमा के अंदर ही क्षमा करें अथवा क्षमायाचना करें। हो सकता है कुछ समय उपरांत क्षमा करने या क्षमा याचना की जरूरत ही न रहे लेकिन तब तक इसके अभाव से उत्पन्न घातक मनोभावों का दुष्प्रभाव तो झेलना ही पड़ेगा अतः नकारात्मक घातक मनोभावों को दुष्प्रभाव से बचे रहने के लिए जितनी जल्दी हो सके क्षमा का सहारा ले लेना चाहिये। मान लीजिए आपके पुत्र या पुत्री ने अपनी मर्जी से अपने जीवन साथी का चुनाव कर लिया और आप इस बात पर नाराज हैं। यद्यपि उन्होंने कोई गलती नहीं की है

लेकिन वे फिर भी आपसे क्षमा याचना कर रहे हैं। समझदारी तो इसी में है कि आप उन्हें क्षमा कर दें और जितना जल्दी हो सके क्षमा कर दें। आप उन्हें क्षमा नहीं करते और जीवन भर निरर्थक क्रोधाग्नि में जलते रहते हैं। अंत समय में आपको होश आता है कि उन्हें बुलाकर क्षमा कर दूं लेकिन तब तक देर हो चुकी होती है। आपकी क्षमा करने में की गई देरी अक्षम्य हो जाती है अब वे आपको माफ नहीं कर पाते। यदि अंत समय में किसी भी प्रकार क्षमा हो भी जाती है तो जो समय बीत गया उसकी क्षतिपूर्ति कहां से होगी? अतः इस प्रकार के दुष्चक्र को जल्दी से जल्दी तोड़ देना ही श्रेयस्कर है। क्षमा कब करें? मांगने पर या बिना मांगे? यदि कोई व्यक्ति क्षमा मांगता है तो क्षमा न करना अपराध जैसी स्थिति हो जाती है।

क्षमा मांगने पर मांगने वाला अपनी गलती को स्वीकार कर अपराधबोध से मुक्त हो जाता है लेकिन क्षमा न करने वाला उसकी पीड़ा से सुलगता रहता है। अतः किसी के क्षमा मांगने पर क्षमा कर देना उसके स्वयं के लिए एक उपयोगी क्षण है। यदि कोई अपनी गलती के लिए क्षमा न मांगे तो भी क्या उसे क्षमा किया जा सकता है? यहा क्षमा करने वाले पर निर्भर है लेकिन क्षमा न करने पर क्षमा न मांगने पर भी। बस थोड़ी सूझबूझ की ज़रूरत है।

दूसरा क्षमा मांगे या न मांगे आप तो किसी भी तरह उसे क्षमा कर घातक मनोभावों से मुक्त हो जाइए। आप क्यों दूसरे की गलती का बोझ अपने मन में ढो रहे हैं? क्षमा न माँगने पर भी किसी को सही तरीके से उसकी गलती का अहसास कराकर क्षमा कर देने से गलती के शीघ्र परिष्कार की अपेक्षा की जा सकती है। क्षमा करना दूसरे को सुधरने का अवसर प्रदान करना ही है अतः यह अनिवार्य भी है।

क्षमा कैसे करें ये भी कम महत्वपूर्ण नहीं। क्या गलती करने वाले या क्षमायाचना करने वाले से जमीन पर नाक रगड़वाकर ही छोड़ें? क्या उसे बार - बार गिड़गिड़ाने पर मजबूर करें? नहीं। क्षमा का सबसे ज्यादा प्रभाव तभी पड़ेगा जब वह सहज भाव से सम्पन्न हो। किसी के आत्मसम्मान को ठेस न पहुंचाते हुए उसकी गलती का अहसास करा कर नम्रतापूर्वक भी इस सारी क्रिया को संपन्न किया जा सकता है। वास्तविक क्षमा तो आचरण से ही व्यक्त हो जाती है आपके व्यवहार से परिलक्षित हो जाती है। क्षमादान वस्तुतः मन की एक दशा, एक भाव है। इसमें कई बार शब्द भी गौण हो जाते हैं क्षमा मांगने या क्षमा करने में किसी भी प्रकार की शर्त लगाने से क्षमा के उद्देश्य की पूर्ति असंभव है। अधूरी या आंशिक क्षमा का भी कोई अर्थ नहीं। बिना शर्त पूर्णरूप से क्षमायाचना करें और क्षमा भी करें।ल ाभ- ह ानिय ा किसी निहित स्वार्थ से ऊपर उठकर क्षमा मांगने और क्षमा देने से क्षमा निष्काम कर्म की कोटि में आ जाती है और निष्काम कर्म सबसे उत्तम माना गया है। जो लोग न क्षमा मांगना जानते हैं और न क्षमा करना ही, वे अपने लिए इस धरती पर ही नरक की सृष्टि कर लेते हैं और उसमें पड़े हैं। क्षमाशील व्यक्ति ही इस धरती पर स्वर्ग की सृष्टि कर जीते जी स्वर्ग भोगते हैं।

ए.डी.-106-सी,
पीतमपुरा, दिल्ली

मां

मां
अपने कमरे की
खिड़की से
निहारती रहती है-
अपने स्वजनों का
और सड़क से
गुजरते राहगीर को।
वह देखती है,
दूर छत में
कपड़े बगराती - सुखाती
अपनी नातिन बहू को
जो अपने नन्हे से बच्चे को
गोदी में लिए-
दुलारती - बहकाती,
लोरियां सुनाती
यहां से वहां
घूमती दिखाई
पड़ती है।
यह देख उसके अन्दर
मां की ममता
जाग उठती है,
उसे गोद में खिलाने
मचल उठती है।
उसे याद आता है
अपने बेटों का
बचपन।
जब ऐसे ही
गोद में लिए
वह लोरियां
सुनाया करती थी।
पीठ थप-थपा कर
उन्हें सुलाया करती थी।
बिस्तर पर लिटाते ही
वे कितनी जोर से
मचलने लगते थे,
तब वह फिर से
गोद में उठाती
उन्हें दुलारती-
पुचकारती
और-सीने से लगाकर
उसके गालों को
चुम्बन की बौछारों से
भर देती थी।
तब वे भी
खिल खिलाकर
हंस पड़ते थे।
आज पक्षाघात से पीड़ित
मां की ममता
अकेली पड़ी
अपने कमरे में
दिल मसोस कर
रह जाती है।
अपने बेटों के लिए
झर- झर आंसू
बहाती है।
क्या भविष्य
इसी तरह की
कहानी दुहराएगा
और दुलारती - पुचकारती
मां को रूलाएगा

जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. राजकुमारी शर्मा राज़ की चार ग़ज़लें

ये कशमकश हयात की, ये बेबसी का दौर।
जल्दी ही खत्म होगा बुझी तीरगी का दौर।।

*

अहले-वफ़ा सवाल करें अपने आप से।
आएगा रास हम को कभी आगही का दौर ।।

*

ये इज्तिमा-ए - अहले जुनूं मुद्दतों के बाद।
कहता है हमसे, शहर में है दीवानगी का दौर।।

*

सांसों के कारवां को रूकावट बने ज़रूर।
लेकिन न रोक पाए इसे बेहिसी का दौर।।

*

मैं तुमसे पूछती हूं, हुआ क्या निज़ाम को।
क्यों पा रहा फ़रोग यहां ख़ुदकुशी का दौर।।

*

चेहरों पे रहबरों के मुखौटे लगाके लोग।
पहुंचा रहे हैं औज पे अब रहज़नीका दौर।।

*

चेहरे को राज़ नाम हमारा मिला हुआ।
लेकिन चहार सम्त है बेचेहरगी का दौर।।

उसका सरापा वक़्ते - सहर ख़ुश्बुओं में था।
लेकिन मिरा वुजूद मिरे आंसुओं में था।।

*

मजबूर हो गया था थिरकने को हर कोई।
ऐसा बला का ज़ोर तिरे धुंधरूओं में था।।

*

तारों की आस्मान पे चादर दराज़ थी।
ज़ज्बा चमकते रहने का पर जुग्नुओं में था।।

*

कैसे उसे निकाल के लाती मैं अपने पास।
वो क़ैद महजबीं के सियह गेसुओं में था।।

*

मुझपर वो मेहरबान न था हो के मेहरबां।
पहलू तो एक ये भी निहां पहलुओं में था।।

*

अपनी बहन की वो भी हिफ़ाज़त न कर सका।
तूफ़ान जो समेटे हुए बाज़ुओं में था।।

*

वो 'राज़' आज देश की संसद में है मुक़ीम।
कल तक कि जिसका नाम बड़े डाकुओं में था।।

तन्हाइयों का दर्द निगाहें फ़ज़ा में है।
तौबा मिरी कुछ ऐसी घुटन अब हवा में है।।

*

तेरे खिलाफ जाऊं तो जाऊं मैं किस रह।
मेरी अगर रज़ा है तो तेरी रज़ा में है।।

*

ये कायनात है तो मगर इसका एहतराम।
महफ़ूज़ हर लिहाज से शाने - ख़ुदा में है।।

*

सहरा कि दश्त, खेत कि तालाब को निहाल।
किसको करेगी, सोच कहां ये घटा में है।।

*

आंधी से रंजो - ग़म की बचाए मिरी हयात।
कल था असर जो, आज भी मां की दुआ में है।।

*

डरता नहीं है कोई भी आमद से मौत की।
दावे के बावजूद अजब हर सदा में है।।

*

मैं 'राज़' उसके साथ हूं किरदार से जो नेक।
ख़ूबी ये आदमी में कहां, देवता में है।।

गुज़रते वक़्त को लफ़्ज़ों में क़ैद करने का।
हुनर मिला है मुझे ग़म में रंग भरने का।।

*

ज़रूरी ये तो नहीं तूम आल तक पहुंचे।
भरी बहार में पर क़स्द कर संवरने का।।

*

सुकून दिल को मयस्सर नहीं तो क्या है बहार।
सवाल तंग करे बार- बार मरने का।।

*

न कोई रब्त बना अपना अक्से - मुबहम से।
तू आइने की तरह सीख फ़न निखरने का।।

*

न काम आया तिरे, सख़्त फ़ैस्ला तेरा।
सिला मिला न तुझे कोई भी उतरने का।।

*

उदास रात की मानिन्द ज़िन्दगी उसकी।
वो इन्तिज़ार करे चांद के उभरने का।।

*

ग़ज़ल की राजकुमारी गगन से उतरी है।
कुछ इन्तिज़ाम करो 'राज़' तुम ठहरने का।।

सी./डी. 30 पुराना कवि नगर
गाजियाबाद 201001

जुग जुग जियो मेरे मालिक

'सरला! अरी सरला, सुन तो जरा।'

'नहीं काकी नहीं, मैंने कहा न नहीं'

'मेरी सौगन्ध जरा बात तो सुन ले!' औरस रलाउ लटे पैर लौट पड़ी, काकी की बात सुनने नहीं, उनकी सौगन्ध पालने के लिये।

'हां कहो क्या बात है।'

'देख री, बड़े घर के लोग हैं, मैं पहिचानती हूं उन्हें, मेरे पीहर के पड़ोसी हैं। मेरे पीहरवालों से दांत काटी रोटी है! बड़े चोखे हैं मान ले।'

दिखते तो अच्छे हैं, चेहरे से, पर दिल में कौन किसी के घुस गया है। आज के जमाने में तो ना रे बापा ना। इनका स्वभाव तो तुम्हें मालूम है।

हां अच्छी तरह मालूम है। उनका स्वभाव और तुम्हारी गरीबी दोनों जानती हूं, तभी तो इतना कुछ कहती हूं वरना काम करने वालियों की कोई कमी नहीं है इस गांव में।

पहले उन्हें मना लो, उन्हें समझा दो बस। नहीं तो आए दिन...

अच्छा तेरे घर वाले को भेज देना, जा।

सरला गरीब नव युवती है, गौरी, स्वाभिमानिनी। शरीर तो दुहरा कदापि नहीं, हां इकहारा कहा जा सकता है। गरीबी के थपेड़ों ने उसे दुर्बल कर दिया है वरना... जब वह इस गांव में नई नवेली दुल्हन बन कर आई थी एक ही थी पूरे गांव में। जिधर उसके पैर बढ़ते मनचलों के भी बड़ जाते, उसकी सुडौल गठन के हाथों के घूंघट के पीछे चांद सा मुखड़ा देखने के लिए गांव के अच्छे, अच्छे लोग तरसते थे। वैसे कहने को तो गांव में कइयों की बिटियां और बहुतों की बहुरानी थी पर उन वृद्धों की घूरती हुई आंखों को देखकर सरला सहम जाती थी। अब भी उसका लावण्य कम नहीं, अब भी उसकी पूछ अधिक है पर गांव वाले उससे डरते हैं। दो की तो भरे बाजार में उसने ऐसी खबर ली कि उनको नानी याद आ गई।

सरला का पति बिरज है। सरला के लिए मान न मान पति पर गांव का वह निठल्ला, पियक्कड़ और चरित्रहीन व्यक्ति है। सरला जितनी सरल उतना ही वह कठोर, सरला जितनी सुंदर उतना ही वह भयंकर, सरला यदि स्वाभिमान की शेरनी थी तो उसके हाथ बिजली के हंटर बहुघा वह गलियों में गुनगुनाता निकल जाता है-

पी ले तू और पी। है मस्त जिंदगी

जब काकी ने उसे समझाया तो मान तो गया। पर घर में आते ही सरला की बांह पकड़ कर बोला, ए वो चश्मे वाले नए साहब आए हैं न, उनके यहां कल से काम पर जाना। उनकी बीवी साथ है, बच्चे भी हैं। हैं सुना? पर... अगर... गांव, में एक भी शब्द तेरे खिलाफ सुना तो तुझे चीर के फेंक दूंगा,

समझी। और दूसरे ही क्षण वही क्रोधिली आंखें चमक उठी, होंठ मुस्करा गए, अपनी घरवाली का एक हाथ बांह में धेरे घर के खम्भे के कोई, पांच-दस चक्कर लगाए। बेचारी को चक्कर आ गए पर उसकी चिन्ता किए बिना वह अपनी टपरिया के बाहर चला गया। सरला कहीं दूर वह चिरपरिचित ध्वनि व गीत का एक बोलसुन सकी।

पी ले तू और पी, है मस्त जिन्दगी

दो वर्ष हो गए हैं उसे काम करते हुए। जब से वह काम पर लगी है उसकी काया पलट हो गई है। रूप, निखर निखर आया है। घर की हालत ठीक हो गई है। ठीक इस दृष्टि से कि अब उसके बच्चों को भूख से बिलखना नहीं पड़ता। उसके बच्चों को पुस्तकादि के लिए मुंह नहीं ताकना पड़ता। हां, उसका बिरज अब अधिक पीने लग गया है। सरला को पीटकर, उससे छन कर पैसे ले जाता है, जब वह पैसे दे देती है तो कुछ नहीं कहता, नहीं तो उसे वह चिल्ला कर भयभीत कर देता है- देख री मैं तेरा काम वाम बंद कर दूंगा। दाऊजी वाले कुएं पर मैंने

कल साहब चले जाएंगे। कल मालिक चले जाएंगे। सरला रातभर रोती रही। बिरज का भी हाल बेहाल था। विवाहित जिन्दगी की पहली रात थी वह, जब सरला और बिरज सारी रात पास-पास बैठे जागते रहे जागते रहे और मालिक मालकिन की विरह व्यथा की कल्पना में बिलखते रहे। उनके हृदय की धड़कनों को समय नहीं गिन सका। उनके मन की कसक को चेतना नहीं देख सकी। उनके दिल की पीड़ा को दुनिया नहीं जान सकी।

ललिता और नीरा की बातें सुनी है। कह रही थी- देखो न कैसे दिन फिरे है चुड़ैल के। न जाने क्या बात है री। बिरज पर भी उन साहब ने कुछ जादू कर दिया है कि अब सरला को कुछ नहीं कहता। साहब के यहां काम क्या करती है उन्हीं से उसका पूरा घर चलता है। वेतन के अतिरिक्त खाना-पीना और कपड़े लत्ते भी मार लाती है वहां से। और न जाने क्या-क्या होता होगा दो आंखों के पीछे भगवान जाने।

सरला के होश उड़ गए जब यह उसने पहली मर्तबा सुना और वह भी अपने ही पति के मुख से। उसने तो उसी दम बिरज से कह दिया, जैसे लोग वैसी बातें। जितने लोग उतनी बात। वे तो जलती हैं अब अपनी किस्मत पर। आप कहें तो मैं आज ही काम पर जाना बंद कर दूं। मुझे मेरी चिन्ता नहीं मेरे, लाड़लों के भविष्य की चिन्ता है, साहब कह रहे थे, उनका भविष्य अच्छा है। बड़े होकर अच्छा नाम कमावेंगे। हाथ भी देखते हैं। ज्योतिष जानते हैं। साहब बहुत अच्छे आदमी है। जरा एक दिन तुम भी बताओ न अपनी किस्मत...। आज ही चलना मेरे साथ।

बिरज जबान से हच कर के चला गया।

वह मालिक के यहां कभी गया नहीं था ऐसी बात नहीं। दो साल में कोई बीस पच्चीस बार लुके-छुपे हीले-हवाले वहां हो गया है।

कई बार तो वह होंठ चबा कर गया। कुछ भी दिख जाए तो मैं उसको मजा-चखा दूंगा। आखिर गांव वालों ने कुछ तो देखा होगा। और जब वह जाता उस छोटे घर में बाल बच्चों काशोरगुल व किलकारियांस ुनक रम ुग्धह ोक रअ ाता।व ह देखता वहां न तो साहब को सरला की तरफ देखने की फुरसत है और न घर का एक भी ऐसा कमरा है जहां बच्चे अपनी दुनिया न बसा रहे हों। जब कभी गया सरला को बीवीजी के पास ही पाया।

बिरज बड़े गर्व से छाती फुलाकर मन में यह कहता हुआ चला जाता। बिरज शराबी है, बदमाश

है, दुनिया जानती है पर वह गाफिल नहीं कम से कम लम्पटों की आंखों से वह खूब माहिर है। और मन ही मन एक ठहाका मारता हुआ वह गांव के गली-गुपचों में होता हुआ, राहों-चौराहों पर बैठता हुआ घर पहुंच जाता।

चतुर्वेदी साहब ने सरला की ओर देखा ही न हो यह तो भला कैसे हो सकता है। हां, यह कहा जा सकता है कि ताका नहीं अलबस यूं कहना चाहिए कि बुरी निगाह से नहीं ताका। वैसे एक दिन की बात उन्हें अभी तक याद है-

नौकरानी पानी भर कर आई। पत्नी व बच्चे पड़ोस में कहीं गए हुए थे। साहब को बेड़ा उतार कर लाना पड़ा घर के अंदर। सरला अपने को अकेली देखकर भयभीत हो गई। बात यह हुई कि उसके मालिक की निगाह सरला के सहसा पड़ गई। बजाय वहां से जल्दी भाग जाने के हठी आंखें कुछ देर के लिए वहां पांव तोड़कर बैठ गई और उसके जोबन के रूप को निहारने लगी जो कि उसकी फटी-चोली से झांक रहा था। वह अंदर ही अंदर कांप उठी परन्तु बाहर से उसने अपने मालिक में पूर्ण विश्वास होने की मुद्रा बनाए रखने का असफल प्रयत्न किया। साहब अपनी गलती मसूस करते हुए तथा निगोड़े मन को मन ही मन गाली देते हुए अपनी अधूरी कहानी लिखने कक्ष में आकर बैठ गए।

चतुर्वेदी जी यह बात अपने मित्र पाठक को भी निष्कपट भाव से बता चुके थे। पाठक जी ने भी उनको धीरज बंधाते हुए बाबा तुलसी के शब्दों में कहा-

कलि कर एक पुनीत प्रतापा। मानस पुन्य होहिं नहिं आपा।

आज दो साल बाद फिर एक बार सरला को बड़ी देर तक देखते रहे पास में बैठी उनकी बीवी ने भी हंसकर पूछा-

क्या बात है क्या देख रहे हो इतने घूर के?

सरला को जरूर घूर रहा हूं पर उसकी नई साड़ी देखकर।

मैंने दी है यह। सो तो जानता हूं... पर मैं यह सोच रहा था कि इन नायलोन की साड़ी में यह कैसी दिखती है?

कैसी?

जैसे पुरानी शराब भरी हुई पुरानी बोटल पर नई कंपनी का नया लेबल।

सारा घर ठहाके से गूंज उठा। और तो और स्वयं सरला ने भी हंसी में कम भाग नहीं लिया चाहे वह उस बात को पूरी तरह समझ सकी या नहीं। अब सरला को उस घर पर लगाव था, बीवीजी से प्रेम था, साहब पर पूर्ण विश्वास था और बच्चों से बेहद प्यार। उसके स्वयं के बच्चे भी सुहब-शाम वहीं खेलते रहते।

अब वह बीवीजी के कहने से नित्यप्रति रामनाम जपती है। घर में उनका दिया हुआ राम

का सुंदर चित्र है। वह प्रतिदिन बाबूजी की उन्नति और सुख के लिए राम से हार्दिक प्रार्थना करती है।

उसके मालिक का अन्यंत्र स्थानांतरण हो गया एक दिन ॿ याख्यातास ेप्र ाचार्यप दप रउ नकी नियुक्ति हुई। जब सरला ने यह सुना तो गश खा कर गिर पड़ी। पानी छिटक कर बीवीजी उसे होश में लाई।उसकी ऐसी हालत देखकर चतुर्वेदी जी के सभी बच्चे रोने लग गए। बीवजी जी तो उसकी छाती पर मुंह रखकर सिसकने लगी। चतुर्वेदी जी ने कमरा बंद कर लिया और लगे चौधारा आंसू बहाने। बड़ा करूणा जनक दृश्य था। बिरज भी चौराहे पर, चर्चा सुन कर भागा-भागा आया। साहब कमरे से बाहर रोता सा चेहरा लेकर आए। बिरज उनके दोनों पैर पकड़कर बुरी तरह रोने लगा।

कल साहब चले जाएंगे। कल मालिक चले जाएंगे। सरला रातभर रोती रही। बिरज का भी हाल बेहाल था। विवाहित जिन्दगी की पहली रात थी वह जब सरला और बिरज सारी रात पास-पास बैठे जागते रहे जागते रहे और मालिक मालकिन की विरह व्यथा की कल्पना में बिलखते रहे।उनके हृदय की धड़कनों को समय नहीं गिन सका।उनके मन की कसक को चेतना नहीं देख सकी।उनके दिल की पीड़ा को दुनिया नहीं जान सकी।

वह सोचती रही क्या देवता भी इसी तरह नहीं होते होंगे। भोर हो गई।दिनकर ने प्रथम किरण दूत भेजकर विश्व के जन-जन को सचेत किया। अपने कर्तव्य पथ की ओर बढ़ने का संकेत दिया। सरला पूजा की थाली लेकर चल दी अपने मालिक को विदा करने।

अनेक छात्र अनेक नागरिक बन्धु तथा मित्रगण चतुर्वेदीजी के विदाई के लिए करूण नेत्रों से खड़े थे। बिरज के साथ सरला भीड़ को चीरती हुई पूजा की थाल लिए अपने देवता को पूजने आई।

सबसे पहले अपने देवता को उसने अमूल्य अश्रुमोती समर्पित किए।मस्तक पर कुंकुम अक्षत लगाया, पुष्पहार पहिनाया, वायुमंडल में सर्वत्र गुलाल उड़ाई और लाज छोड़कर आज यह गांव की गरीब दुल्हन पुरजोर रोने लगी। घिग्घी बंध गई उसकी। दर्शक चित्रवत हो गए। उनकी वाणी मूक हो गई।केवल अश्रु धाराएं निकल रही थीं।

रोती कांपती आवाज में टूटे स्वरों में सरला सहृदय सरला ने मालिक की नौकरानी ने गांव की बहु ने विरज की प्यारी दुलारी ने समाज की गरीब नारी ने साहस बटोर कर कहा- जुग-जुग जियो मेरे मालिक।

मां-145, गोपाल कालोनी
झाबुआ (मध्यप्रदेश)

मधु हातेकर

इंतजार

मीना आज सबेरे से ही काफी अस्वस्थ सी लग रही थी। कहीं भी मन नहीं लग रहा था। किसी तरह खाना खाया। इतने बड़े घर में उसका अकेलापन उसको खाए जा रहा था। हाल में आकर सोफेप रबै ठग ई ।ट ीव्हीअ ॉनि कियास ीरियल देखने की कोशिश करने लगी। मन नहीं लग रहा था। टीव्ही बंद कर रेक से एक किताब उठा लाई। 6-7 पन्ने पढ़े पर आगे पढ़ने को जी नहीं हो रहा था। क्या करे कुछ करने में मन नहीं लग रहा था। क्या करे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। बड़ा ही बेचैनी सी लग रही थी उसे। 5-6साल से न बंटी अमेरिका से आया था और न ही 3-4 महीनों से उसका फोन ही आया था। बच्चों की भी बहुत याद आज उसे आ रही थी। बहुत दिनों से देखा भी नहीं था। बंटी रीता बच्चे कुछ दिनों के लिए आ जाते थे तो मीना को बहुत अच्छा लगता था। पता नहीं बच्चे अब कैसे दिखते होंगे। बच्चों की याद आते ही उसका मन और भी अधिक विचलित हो उठा। एलबम लेने गई। कपाट से निकालते-निकालते एलबम नीचे गिर गया। पुराना एलबम खुला पड़ा था। सोफे पर लाकर देखने लगी। पुराने ब्लेक एण्ड व्हाईट फोटो देखते-देखते उसे अपना बचपन सहसा ही याद आ गया।

इंतजार तो मीना अपनी किस्मत में लिखाकर ही पैदा हुई थी। दो बहनों और एक भाई में बड़ी होने से घर के काम में भी मां की मदद करना पड़ता था। नवमी तक वह पास हो गई। पर दसवीं में आकर फेल हो गई। एस.एस.सी. होने में उसे चार साल लग गए उसकी बहनें उससे आगे निकल गई। इसलिए उसे घरवालों का काफी रोष भी सहना पड़ा। उसके पापा ने आगे पढ़ाने से बेहतर उसकी शादी करना उचित समझा। पर उसकी शादी

भी आसानी से नहीं हो पाई। यहां उसे इंतजार करना पड़ा। इस बीच उसकी एक बहन की शादी भी हो गई। जो भी उसे देखने आते नापसंद करते गए। सबसे छोटी बहन के लिए रिश्ते आने लगे तो उसके मां-पापा को और भी चिंता होने लगी उसके मन पर भी दबाव हमेशा बना रहता था और भी उदास-उदास सी रहने लगी। पर अचानक एक दिन उसकी किस्मत ने पलटी मारी। उसे देखने आए किशोर को उससे जाने कैसी सहानुभूति सी हो गई। वह विवाह के लिए राजी भी हो गया और शादी होकर मीना किशोर के साथ अपने सपनों का संसार बसाने चली गई मां-पापा ने बेटी का कल्याण हो गया देख चैन की सांस ली।

किशोर के साथ हंसी-खुशी के साथ दिन गुजर रहे थे। वह किशोर की मां और उससे छोटे भाइयों का भी काफी ख्याल रखती। शादी होकर तीन साल हो गए तो किशोर की मां कुछ परेशान सी हो गई।

देखते सात साल गुजर गए। इस बीच किशोर के छोटे भाइयों की शादी भी हो गई और उन्हें एक-एक बच्चा भी हो गया पर मीना को बच्चा होने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे। तो किशोर की मां का संयम टूटने लगा और उसे कोसने पर आ गई। किशोर से वह कहती रहती। कई बार उसके सामने दूसरे विवाह का प्रस्ताव भी रखा। तो किशोर उसे यह समझा-बुझाकर खामोश करा देता कि मां क्या हुआ अगर मेरा बच्चा नहीं है पर बबलू और मुन्ना के तो बच्चे हैं। पर इससे मां को तसल्ली नहीं होती वह मीना को तरह-तरह से सताने लगी थी। इससे मीना और भी परेशान हो गई। पर उसको उदास देखकर किशोर उसे भी समझता-छोड़ो न मां की बातों को। बूढ़ों की मानसिकता ही ऐसी होती है। यह कहकर उसे धीरज देता।

अब भगवान से भी शायद मीना की इस पीड़ा को देखा नहीं गया। और मीना को बच्चा होने का आभास हो गया। वह खुशी से फूली नहीं समा रही थी। किशोर की भी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। पर घर में सबसे ज्यादा खुशी हुई किशोर की मां को। बरसों की उसकी इच्छा पूरी होने जा रही थी। वह अब मीना का बहुत ज्यादा ख्याल रखने लगी। अपने हाथों से उसे अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर खिलाने लगी। डॉक्टर के पास भी समय-समय पर चेकअप के लिए ले जाती। जैसे-जैसे मीना की ड्यू-डेट करीब आने लगी वैसे-वैसे उसकी तकलीफ भी बढ़ने लगी। एक दिन उसे बहुत तकलीफ हुई तो किशोर की मां उसे अस्पताल ले गई। चेकअप के बाद डॉक्टर ने बताया घबराने की कोई बात नहीं आज रात तक डिलेव्हरी हो जाना चाहिए। पर मीना को अस्पताल में आए 15-20 दिन गुजर गए पर मीना की डिलिव्हरी नहीं हो पा रही थी तो डॉक्टर की भी अब अचरज होने लगा। उसने कहा- वैसे तो मीना की नॉर्मल डिलिव्हरी होना चाहिए थी अब लग रहा है सिजरिंग ही करना पड़ेगा। दूसरे दिन सबेरे सिजरिंग करना तय हुआ।

इंजीनियरिंग के बाद मनू ने मैनेजमेंट का कोर्स भी पूरा किया और उसे अच्छी नौकरी भी लग गई। उसकी योग्यता के कारण शीघ्र ही उसका प्रमोशन भी हो गया और अमेरिका के आफिस में बदली भी हो गई। मीना ने कहा बेटा-कहां इतनी दूर जा रहे हो यहीं कोई अच्छा जॉब मिल जाएगा। तुम्हारे बिना मैं अकेली कैसे रहूंगी। तुम्हारे बिना तो एक पल भी मैं रह नहीं सकती। मनू ने कहा - मम्मी इतना अच्छा चांस फिर नहीं मिलेगा एक-दो साल में वापस आ जाऊंगा। मीना को समझा बुझा कर अमेरिका चला गया। हर हफ्ते मीना को फोन कर लेता। साल में एक बार आता। चला जाता तो फिर मीना उसके आने के इंतजार में रह जाती। उसकी एक सहकारी भारतीय लड़की के साथ शादी करना चाहा तो मीना ने उसे सहर्ष स्वीकृति दे दी और बड़ी धूमधाम के साथ मनू और मीनू की शादी करा दी।

आपरेशन की सारी तैयारी भी हो गई। डॉक्टर ने किशोर से कहा- देखिए मीना की काफी क्रिटिकल कंडीशन है। हो सकता है हम मां या बच्चा किसी एक को बचा सकें।

किशोर ने डॉक्टर से कहा- डॉक्टर साहब मुझे बच्चा नहीं चाहिए मेरी मीना को बचा लिजिए। हालांकि ये बातें रूम के बाहर हो रही थी। मीना को शक हुआ और उनकी बातें भी सुन ली खिड़की से। उसने डॉक्टर से कहा- डॉक्टर साहब आप मेरी चिंता मत कीजिए। मेरे बच्चे को बचा लिजिए। मैं उसकी दादी को यह अनुपम उपहार देना चाहती हूं। उन्हें बच्चे की बहुत चाहत है। आपरेशन अच्छा हुआ। प्यारा सा बेटा हुआ मीना को। बहुत इंतजार के बाद बेटा हो जाने से अपनी सारी पीड़ा भूल गई। बेटा हो जाने से उसे जो खुशी हुई होगी उसे वही

महसूस कर रही होगी। किशोर को खुशी हुई पर उसकी मां की तो खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। पूरे वार्ड में और मोहल्ले में मिठाई बंटवाई। बच्चे का नाम मनोरम रखा पर प्यार से उसे सभी मनू कहते।

मनू घर में सबसे छोटा होने से सबका प्यारा सबका लाडला हो गया। सभी उससे बहुत प्यार करते। दादी का तो वो जी और प्राण था। आखिरी दिनों में दिल बहलाने का एक खिलौना बन गया था उसके लिए। देखते-देखते मनू एक साल का हो गया उसका जन्म दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दो वर्ष बाद किशोर की मां का निधन हो गया। मानो जैसे मनू को देखने के लिए ही वह आज तक जिन्दा थी। मां के जाते ही तीनों भाई भी अलग-अलग हो गए और अपने-अपने परिवार वालों के साथ रहने लगे। ऐसे ही में किशोर की दूसरे शहर में बदली हो गई। मीना मनू के साथ अकेली रहने लगी। मनू का स्कूल में एडमिशन भी हो गया। स्कूल की सारी तैयारी हो गई। आज सुबह से मनू का रोना-धोना शुरू हो गया। स्कूल जाने के लिए तैयार ही नहीं हो रहा था। मीना ने समझा बुझाकर किसी तरह मना कर तैयार कर लिया। स्कूल की बस आ गई। मनू को मीना बस में बिठाने लगी। वह मीना से ऐसा चिपका था कि बड़ी मुश्किल से मीना ने उसे अपने से अलग करके बस के कंडेक्टर के हवाले किया। बस चल पड़ी मनू खिड़की से बाहर सिर

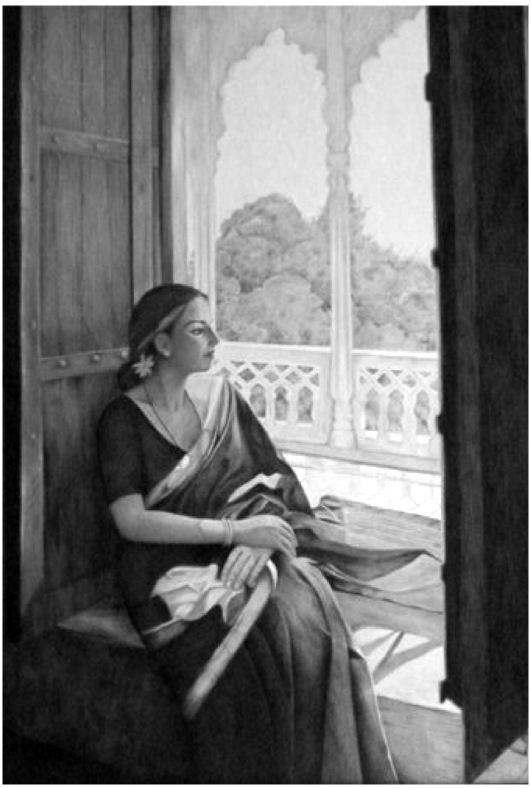

निकालकर मम्मी-मम्मी कहके रो रहा था। मीना को भी बहुत रोना आ रहा था। बस उसकी आंखों से ओझल होने तक देखती रह गई। मीना घर में आकर भी बहुत देर तक रोती रही। खाना भी नहीं खाया उसने। रह-रहकर मनू के बारे में सोचती रहती। स्कूल में कैसे रहा होगा। रोता तो नहीं होगा। चार बजे से ही मीना राह देखने लगी थी। मनू के स्कूल से आने की। सवा चार बजे से सड़क पर आकर मनू के आने का इंतजार करने लगी। साड़े चार बजे बस आई। मीना ने उसे बस से उतारा मनू उससे चिपक गया। उसे गोद में उठाए फ्लैट तक ले आई। 2-3 दिन मनू ने स्कूल जाने के लिए तकलीफ दी पर बाद में वह अपने से होकर स्कूल जाने लगा। किशोर शुक्रवार काफी रात में आता और सोमवार सबेरे चला जाता। हर हफ्ते मीना किशोर के आने का इंतजार करती। दिन बीतते गए मनू अब हाईस्कूल में भी जाने लगा। 12वीं में फर्स्ट क्लॉस में पास होने से मनू को इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन मिल गया। एक रात घर आते-आते किशोर की बस का एक्सीडेंट हो गया। अस्पताल में डॉक्टर की काफी कोशिशों के बावजूद भी वे किशोर को बचा न सके। मीना पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। मनू की ओर उसके भविष्य को देखते हुए मीना ने अपने आप पर संयम रखा। आंसू पोंछकर मनू के लिए अपने आपको स म्हाला। किशोर के मिले पैसों को फिक्स डिपाजिट में डाल दिया। उसके ब्याज पर और घर में

सिलाई का काम करके मनू को पढ़ाया। उसके आग्रह पर उसे कॉलेज जाने के लिए मोटर सायकल ले के दी। पर मनू के घर सकुशल आने तक उसकी जान में जान नहीं रहती। सड़क पर आकर उसके आने का इंतजार करती रहती। मनू उसे रोज समझाता-मम्मी अब मैं बड़ा हो गया हूं। सभी लड़के तो कॉलेज मोटर सायकल परही जाते हैं। मेरी इतनी फिकर मत किया करो आप। मीना कहती- बेटा तू ठीक कहता है पर बेटा मां का दिल आखिर मां का दिल होता है।

इंजीनियरिंग के बाद मनू ने मैनेजमेंट का कोर्स भी पूरा किया और उसे अच्छी नौकरी भी लग गई। उसकी योग्यता के कारण शीघ्र ही उसका प्रमोशन भी हो गया और अमेरिका के आफिस में बदली भी हो गई। मीना ने कहा बेटा-कहां इतनी दूर जा रहे हो यहीं कोई अच्छा जॉब मिल जाएगा। तुम्हारे बिना मैं अकेली कैसे रहूंगी। तुम्हारे बिना तो एक पल भी मैं रह नहीं सकती। मनू ने कहा - मम्मी इतना अच्छा चांस फिर नहीं मिलेगा एक-दो साल में वापस आ जाऊंगा। मीना को समझा बुझा कर अमेरिका चला गया। हर हफ्ते मीना को फोन कर लेता। साल में एक बार आता। चला जाता तो फिर मीना उसके आने के इंतजार में रह जाती।

उसकी एक सहकारी भारतीय लड़की के साथ शादी करना चाहा तो मीना ने उसे सहर्ष स्वीकृति दे दी और बड़ी धूमधाम के साथ मनू और मीनू की शादी करा दी। कुछ दिन मीना के साथ रहकर मनू -मीनू अमेरिका चले गए। और मीना रह गई अकेली उनके पुनः आने के इंतजार में।

अब मनू महीने में 1-2 बार और फिर बाद में 2-3 महीने में कभी फोन करता। अब भारत आना भी कम होता। दो-ढाई साल में आना। पूछने पर कहता-मम्मी व्यस्तता बहुत बढ़ गई, समय नहीं मिल पाता। धीरे-धीरे से सिलसिला बढ़ता ही गया। अब 3-4 वर्ष बाद बच्चों के साथ आया था। बच्चों के साथ मीना को बहुत अच्छा लगता। पिछले 4-5 वर्षों से मनू नहीं आया था। 4-5 महीनों में कभी-कभार फोन कर लेता। आज सबेरे से मीना बहुत उदास थी।

बच्चों की भी बहुत याद आ रही थी। इतनी हिम्मत नहीं थी कि बाहर एसटीडी बूथ पर जाकर फोन करे। सोफे पर अचेत सी पड़ी रह गई। आंखें दरवाजे लगाए कभी तो मनू आएगा। वह मनू का इंतजार करती रह गई और इंतजार करते-करते कब चल बसी पता ही नहीं चल पाया। बस मीना की आंखें खुली की खुली रह गई मनू के इंतजार में यही कहते- ओ मेरे लाल आजा...

6 लुंकड़ एव्हिन्यू
विमान नगर, पुणे

पं. नारायण शर्मा कौशिक

शिवरानी देवी : संस्मरण

(मुंशी प्रेमचंद्र की धर्मपत्नी)

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवताः

जहां नारी वर्ग का सम्मान होता है, वहां देवता भी अपनी अहम सीसाएं करते हुए हुए सुख समृद्धियां प्रदान करते हैं।

हिन्दी साहित्य जगत में दीप्तिमान नक्षत्र प्रेमचंद जी की धर्म पत्नी श्रीमती शिवरानी देवी ने अपने संस्मरणों में बताया है।.... नारी सबलता के बल पर आज उन्हें देश का एक महान लेखक होने का गौरव प्राप्त हुआ है। दरअसल हर चीज लगन पर निर्भर करती है। वह इतने लगनशील थे कि लिखने बैठते तो समय की सुधि ही नहीं रहती थी। हंसमुख ऐसे थे कि हंसते थे तो हंसते ही रह जाते थे। अपनी मित्र मंडली में इसी वजह से लोग उन्हें बम्बूक कहा करते थे।

मैं यह कहना नहीं भूलूंगी कि मेरी सास (सासु) कैसी थी? बहुत प्रखर बुद्धि और कई भाषाओं की विज्ञा थी मेरी सास। विशेषता यह थी कि पढ़ तो सब लेती लेकिन एक भी अक्षर नहीं लिख सकती थी। उनके किस्से, उनकी कहानियां इतनी लम्बी होती थी कि सुनाते-सुनाते खत्म ही नहीं होने को आती और क्रम लगभग पन्द्रह दिन जारी रहता था। श्रोता सहज में जिज्ञासु होने से चुपचाप सुना करता था। उनका लिखने का शौक भी दरअसल यहीं से पैदा हुआ था (प्रेमचन्द्र जी का) अपनी मां से प्रेरणा लेकर ही उन्हें आज उपन्यास सम्राट होने का गौरव प्राप्त हुआ।

विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनमें निर्माण में और उत्थानम ेंउ नकीम ाताक ाप्र थमह ाथर हाहै । बालक का प्रथम क्रीड़ा स्थल माता की गोद ही है। जननी के स्नेह, ममत्व एवं सौहार्द्र से अनुप्राणित

बालक उसके आदेश को बड़ी तत्परता से मानता है। माता के आदेश के पालन और अनुकरण में उसे सुख मिलता है। यूं तो बच्चा परिवार में अन्य लोगों से भी घुलता मिलताह ै,प रन्तुअ ारंभम ेंम ाताज ैसी घनिष्ठता किसी से भी स्थापित नहीं हो पाती। माता ही उसकी प्रथम गुरु है। माता ही प्रथम मित्र है, और माता की गोद ही प्रथम पाठशाला है।

शास्त्रों में माता को बालक का प्रथम गुरु कहा गया है। इसके पीछे भी यही तथ्य अन्तर्निहित है कि माता ही सर्व प्रथम उसे आचार व्यवहार की शिक्षा देती है। तथा संसार की विविध वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त कराती है। इसके लिए उसके पास एक ही साधन होता है। बालक की जिज्ञासाओं की परिवृत्ति। बच्ची को कुछ भी पता नहीं होता कि संसार में क्या हो रहा है? माता द्वारा ही वह उस ज्ञान का बहुत बड़ा अंश पाता है।

माता के व्यक्तित्व का प्रभाव बालक पर पड़ना स्वाभाविक ही है। यदि माता का व्यक्तित्व कमजोर हुआ तो बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण की कल्पना निराधार ही होगी। प्रेमचंद जी को साहित्य सम्राट बनाने का श्रेय उसकी मां को ही जाता है। यह नारी सबलता एवं जागृति का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी साहित्यजगत के उपन्यास सम्राट के रूप में भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी विख्यात हैं।उनके उपन्यासों में कहानियों में सहज पात्र, जो स्वाभाविक घटनाक्रम जो आदर्शोन्मुख यथार्थ और भारतीय जन जीवन का सजीव चित्रांकन हुआ है. यह बहुत कुछ उनकी माता की

देन थी। किस प्रकार से वे अपनी लम्बी-लम्बी कहानियों में भी श्रोता को बांधे रखती थी कि वे लम्बे समय तक उनमें तन्मय रह जाते हैं। उनके कला कौशल ने प्रेमचंद्र को बहुत कुछ दिया था।

ऐसी ही बौद्धिक और सद्ज्ञान की सम्पदा से भरी पूरी माताएं ही अपने बालकों को ऐसा कुछ दे सकती हैं कि वे आगे चल कर विशिष्ट व्यक्ति कहला सकें। हमारी नारी जाति में ऐसी सामर्थ्य उपजाने के लिए अभी बहुत प्रयास करने पड़े हैं। उनकी मानसिक, बौद्धिक, शैक्षाणिक और अध्यात्मिक प्रगति के सदियों से अवरुद्ध खोलना होगा, योग्य माताएं होंगी, तभी हमारे देश को योग्य नागरिक प्राप्त होंगे।

यदि नारी की सबलता का भान हो जाए या नारी को सबल बना दिया जाए तो मानवीय श्रृंखला में सेवा-समर्पण-सद्भाव एवं सुख समृद्धि की कभी भी न्यूनता नहीं होगी।

श्री सालार पंचांग, मेड़ता सिटी
नागौर (राजस्थान)

बचत

उम्मीद लेके आता है इंसा बड़ी-बड़ी,
लेकिन हताश करती हैं, संकट की हर घड़ी
चारों तरफ हैं देखते, सहारे तलाशते
आती है काम राशि जो जोड़ी थी हर घड़ी

अरमाँ बड़े-बड़े है दुनियाँ में हमारे
बढ़ते हैं हाथ छूने को आकाश के तारे
स्वर्णिम कमल खिलाने की उम्मीद गरबँधी
आयेगी काश राशि जो जोड़ी थी हर घड़ी

मौसम सुहाने आये थे फसलें बहार के
दिलकश नजारे छाये थे प्रीत-प्यार के
अब दिन हुये पहाड़ जो मुश्किल है ये पड़ी
आयेगी काम राशि जो जोड़ी थी हर घड़ी ।

परिवर्तनों के दौर हैं दुनिया बदल गई
राजा हुये हैं रंक और राई पहाड़ है
हमको था क्या बनना, मुश्किल है क्या पड़ी
आयेगी काम राशि जो जोड़ी थी हर घड़ी

धरती की गोद प्यारी, धन राशि है भरी
करते कठिन परिश्रम, पाने को धनपरी
मन जो हताश हो, लगें आशायें जो ढही
आयेगी काम राशि जो जोड़ी थी हर घड़ी

सुख का है सूर्य जीवन, चंदा की चाँदनी
कान्हा हैं मचल जाते, यशोदा दुलारती
सुरभित गृहस्थियों पे जो दुख की हवा चली
आयेगी काम राशि जो, जोड़ी थी हर घड़ी

श्रीमती आशा मानव
से.-4, मकान नं. 8
दीनदयाल उपाध्याय नगर,रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ की साहित्यिक यात्रा का सफल रेखांकन

'छत्तीसगढ़ के साहित्य साधक' प्रो. अश्विनी केशरवानी की नवीनतम कृति है। इस पुस्तक में उन्होंने 31 साहित्य साधकों के व्यक्तित्व और कृतिव पर अपनी लेखनी चलायी है। इस पुस्तक में संग्रहित सभी ऐसे साहित्यकार हैं जो स्वर्गवासी हैं। इनमें कुछ चर्चित थे और अधिकांश को बहुत कम लोग जानते थे। छत्तीसगढ़ प्रदेश साहित्य सेवा में कभी पीछे नहीं रहा है। इस प्रदेश की सृजनशील प्रतिभाएं हिन्दी साहित्य के विकास में अपनी भूमिका निभाती आ रही है। लेकिन यह विडंबना ही है कि उनकी इस भूमिका का सही आकलन एवं मूल्यांकन आज तक नहीं हो सका है। इस पुस्तक के प्रकाशन से निश्चित रूप से उन्हें पढ़ा जायेगा और इस दिशा में प्रयास होगा, ऐसी आशा की जा सकती है। कदाचित् इसीलिए डॉ. बाबुलाल शुक्ल ने भूले बिसरे साहित्यकारों को याद करना अपनी परंपरा की पहचान के साथ ऋण शोध भी माना है। उनका यह भी मानना उचित है कि वर्तमान की सही पहचान के लिए अतीत की साझेदारी आवश्यक है।

भारतेन्दुकाल में काशी एक साहित्यिक केंद्र था और उसका नाभिकेंद्र भारतेन्दु हरिश्चंद्र थे। उन्होंने तब यहां ''भारतेन्दु मंडल'' एक साहित्यिक संस्था बनायी थी। ठीक इसी प्रकार दूसरा साहित्यिक केंद्र छत्तीसगढ़ के शिवरीनारायण में था जिसका नाभिकेंद्र ठाकुर जगमोहन सिंह थे। वे न केवल भारतेन्दु हरिश्चंद्र के सहपाठी और मित्र थे बल्कि एक उच्च कोटि के कवि, आलोचक और साहित्यकार थे। उन्होंने शिवरीनारायण में 'भारतेन्दु मंडल' की तर्ज में 'जगन्मोहन मंडल' बनाकर यहां के बिखरे साहित्यकारों को न केवल एकत्रित किया बल्कि उन्हें लेखन की दिशा भी दी। इसके पहले यहां साहित्यिक प्रतिभाएं राज्याश्रय में थी और राजा के कार्यो का गुणगान करना उनका प्रमुख विशय था। पं. माखन मिश्र, बाबू रेवाराम, पं. प्रहलाद दुबे, पं. मेदिनीप्रसाद पांडेय ऐसे कवि थे इसलिए उनकी रचनाओं में उन राज्यों की झलक दिखाई देती है। अनेक साहित्यकारों ने स्वतंत्र लेखन किया है। इसलिए उनकी रचनाओं में भक्ति रस, वीर रस के साथ सौंदर्य रस का पान किया जा सकता है। कुछ साहित्यकारों ने लोक साहित्य और वाचिक परंपरा को लिपिबद्ध किया है तो कुछ ने साहित्य, इतिहास और पुरातत्व के क्षेत्र में भी लेखन किया है। लेखक स्वयं भारतेन्दु कालीन साहित्यकार श्री गोविंद साव के छठवीं पीढ़ी के पौध है इसलिए साहित्यिक प्रतिभा उन्हें विरासत में मिली है और उन भूले बिसरे, गुमनाम साहित्यकारों पर क्षेत्रीय, प्रादेशिक और राश्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। कदाचित् ऐसा उन साहित्य साधकों की प्रेरणा रही हो ?

इस पुस्तक में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की हिन्दी साहित्य में उपेक्षा की चर्चा की गयी है। वकई हिन्दी साहित्य के इतिहास में यहां के कवियों का नामोल्लेख न होना दुखद तो है ही मगर इसके लिए उनकी रचनाओं का हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों को उपलब्ध न होना प्रमुख कारण माना जा सकता है। यह भी हो सकता है कि उन्हें छत्तीसगढ़ जैसे वनांचल और सर्वाधिक पिछड़े प्रांत में ऐसे लब्ध प्रतिश्ठ साहित्यकारों के होने की कल्पना नहीं रही होगी और वे उनकी बिना खोज खबर किये हिन्दी साहित्य का इतिहास लिख डाले ? लेकिन पंडित लोचन प्रसाद पांडेय के प्रयास से अन्यान्य साहित्यकारों की रचना प्रकाशित हो सकी थी। वे इतिहास, पुरातत्व और साहित्य की सभी विधाओं में लेखन किया है। लेकिन उनका जीवन परिचय लिखने का सद्कार्य श्री प्यारेलाल गुप्त ने किया है। पं. अमृतलाल दुबे ने वाचिक परंपरा के गीतों को सस्वर लेखबद्ध करने का स्तुत्य कार्य किया है।

इस पुस्तक में छत्तीसगढ़ के रीतिकालीन कवि पं. गोपाल मिश्र, बाबू रेवाराम और पंडित प्रहलाद दुबे, भारतेन्दु कालीन रचनाकारों में ठाकुर जगमोहन सिंह, पं. अनंतराम पांडेय, पं. मेदिनी प्रसाद पांडेय, पं. हीराराम त्रिपाठी, पं. मालिकराम भोगहा, पं. पुरूशोत्तम प्रसाद पांडेय, जगन्नाथ प्रसाद 'भानु', गोविंद साव और महावीर प्रसाद द्विवेदी युग के अन्यान्य मर खप गये उच्च कोटि के साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतिव को रेखांकित गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, द्वारिकाप्रसाद तिवारी विप्र, राजा चक्रधर सिंह चर्चित व्यक्तित्व थे लेकिन अपेक्षाकृत कम चर्चित कवियों में भवानी शंकर शडंगी, डॉ. लोचनप्रसाद शुक्ल, चिरंजीव दास, कपिलनाथ कश्यप, पं. किशोरीमोहन त्रिपाठी पर भी कलम चलायी गयी है। कुछ अन्यान्य साहित्यकारों को सम्मिलित किया जाना उचित होता मगर लेखक के इस विचार से सहमत हुआ जा सकता कि पुस्तक की सीमा को ध्यान में रखा गया है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इस पुस्तक के लेखक प्रो. अश्विनी केशरवानी महाविद्यालय में विज्ञान के प्राध्यापक हैं लेकिन उनकी इतिहास, साहित्य और छत्तीसगढ़ की परंपराओं में गहरी अभिरूचि के कारण अभी तक विभिन्न विधाओं में

उनकी छः पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। इस पुस्तक के प्रकाशन में संस्कृति विभाग छ. ग. शासन का सहयोग मिलना सुखद है। कुल मिलाकर पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है।

पुस्तक : छत्तीसगढ़ के साहित्य साधक
लेखक : प्रो. अश्विनी केशरवानी
प्रकाशक : श्री प्रकाशन, आदर्श नगर दुर्ग
मूल्य : तीन सौ रूपये मात्र
समीक्षक : प्रांजल कुमार
वेन, न्यू जर्सी यू. एस. ए.

घर-परिवार के धूपछांव तले सुखद शाम की आस

'घर परिवार' कल्याणी केशरवानी जी की पहली प्रकाशित कृति है। हालांकि अस्सी और नब्बे के दशक में उनके पारिवारिक आलेख पत्र पत्रिकाओं में प्रमुखता से छपते रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं आलेखों का संग्रह है। उनके आलेखों में अपने और आसपास घटने वाली घटनाओं का सहज सरल विश्लेशण और निराकरण होता है जिससे आम पाठक उसे अपने परिवार की समस्या मानकर खुश हो जाता था। घर है तो परिवार है ... और घर परिवार में चार बर्तन है तो उसमें टकराव होगा ही। परिवार में ईगो, मतभेद, शंका–कुशंका और पति पत्नी के झगड़े धीरे धीरे इतना विकराल हो जाता है कि परिवार बिखर जाता है, और कभी कभी तो इसके दुश्परिणम होते हैं। दहेज, भौतिक सुख सुविधा की अनुलब्धता, बच्चे नहीं हुए या लड़के की चाह में लड़कियों की फेहरिस्त आदि अनेक कारणों से परिवार में अशांति हो जाती है और परिवार में पति पत्नी अजनबी जैसे रहने के लिए मजबूर होते हैं। किसकी चाह नहीं होती कि उसका पति उसक बेहिन्तहा चाहता रहे, उसकी हर चाहत को खुशी खुशी पूरी करे लेकिन न जाने ऐसा क्या होता है कि यह चाहत धरी रह जाती है।

रोज रोज की छोटी छोटी समस्याएं विकराल रूप धारण करके परिवार की शांति में जहर घोल देता है। दिन भर के कामकाज के बाद दो घड़ी का सुकुन और प्रेम भरा साथ भी दूभर हो जाता है। क्योंकि वही चाहत जो कभी एक दूसरे के लिए थी, अब कुछ और चाहने लगता है। इसके लिए लेखिका का सुझाव है कि वैवाहिक सम्बंधों को मधुर बनाए रखने और पति पत्नी को खुश रखने की दिशा में सबसे कारगर उपाय है संयम। गुस्सा किसे नहीं आता और जब आता है तो दूध की उफान की तरह। मुंह से निकली बातें तरकश से निकले तीर की तरह वापस नहीं आती। ऐसे समय में संयम से काम लिया जाए तो बात नहीं बिगड़ नहीं पाती। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि पुरूशों की अपेक्षा स्त्रियों में संयम अधिक होता है। घर को घर बनाए रखने की चिंता भी उसी को अधिक होती है।

आज के भौतिकतावादी युग में जहां पति पत्नी दोनों को घर की चार दीवारी को लांघने पर मजबूर कर दिया वहीं परिवार को बड़े बूढ़ों और बच्चों से अलग कर दिया है। संयुक्त परिवार की बात अब कपोल कल्पित लगते हैं। पत्नी सारा दिन खटने के बाद जब घर लौटती है तो बच्चे–बूढ़े सब अपना बोझ उनके साथ शेयर करने को बेताब रहते हैं। थोड़ा सा खाली समय जिसमें बच्चों की देखरेख और ममता चाहिए, पति को सेवा चाहिए, परिवार को व्यवस्था चाहिए और अतिथियों को सत्कार... । थके पांव, सीमित समय और चारों ओर व्यस्तता, ऐसे में सुखद शाम की बात धरी की धरी रह जाती है। बड़े बुजुर्गो की अनुभवी झिड़की और बच्चों को मन लुभावनी शरारतें भी बोझ लगने लगता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'घर परिवार' में 28 पारिवारिक आलेख संग्रहीत हैं जो परिवार की विभिन्न समस्याओं को लेकर लिखी गयी है। अपने आलेखों में कल्याणी जी ने सुखी और समृद्ध परिवार के लिए महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए हैं जो घर परिवार के छांव तले सुखद शाम की बात को साकार करती है। इससे यह पुस्तक हर घर और परिवारजन के लिए उपयोगी बन गया है। घर परिवार का बहुत छोटा पौध होने से मैं अभिभूत हूं। पुस्तक का कवर घर परिवार को रेखांकित और आकर्शित बनाता है।

पुस्तक : घर परिवार
लेखक : कल्याणी केशरवानी
प्रकाशक : श्री प्रकाशन, आदर्श नगर दुर्ग
मूल्य : तीन सौ रूपये मात्र
समीक्षक : प्रांजल कुमार
वेन, न्यू जर्सी यू. एस. ए.

विश्व मैत्री मंच का प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन

हेमंत फाउन्डेशन के विश्व मैत्री मंच द्वारा आयोजित महिला पत्रकारों एवं साहित्यकारों का प्रथमस म्मेलनध र्मशाला(हि.प्र.)म ें स ुप्रसिद्ध लेखिका जया शर्मा केतकी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ।

बीज वक्तव्य संतोष श्रीवास्तव, प्रस्तावना एवं संस्था की गतिविधियाँ सुमीता केशवा ने दी । कार्यक्रम में बिंदिया की संपादक गीताश्री, डॉ. विद्या चिटको डॉ. रोचना भारती, डॉ. कृष्णा सखी, मीनू मदान, प्रभा शर्मा, डॉ. ज्योति गजभिये, प्रमिला शर्मा, मधु सक्सेना, सरोज गायकवाड़, संपत देवी मुरारका एवं मधुश्रृंगी के अलावा स्थानीय गणमान्य साहित्यकार उपस्थित थे । आभार प्रदर्शन लक्ष्मी यादव ने किया ।

छत्तीसगढ़ प्रदेश सिंधी साहित्य संस्था द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन सिविल लाईन स्थित वृंदावन हॉल में सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम के आयोजक एवं अतिथिगण तथा मंच पर कवियित्रियाँ ।

पं. माधवराव सप्रे की पुण्यतिथि के अवसर पर स्वदेशी एवं साहित्य विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी एवं साहित्य उत्सव का कार्यक्रम पं. माधवराव सप्रे साहित्य एवं शोध केन्द्र रायपुर एवं छत्तीसगढ़ मित्र मासिक पत्रिका द्वारा किया गया ।कार्यक्रम में चयनस्थ अतिथियों में गिरीश पंकज, परितोष चक्रवर्ती डॉ. सुशील त्रिवेदी, मनहर चौहान, डॉ. सुधीर शर्मा एवं

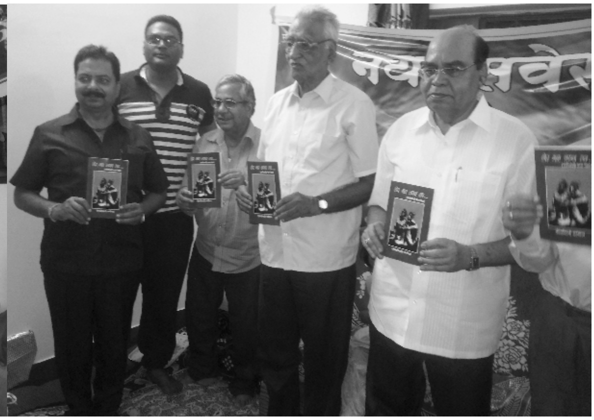

साहित्य एवं खेल विकास परिषद् नया सवेरा रायगढ़ द्वारा डॉ. बल्देव वरिष्ठ लेखक, समीक्षक का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया । इसके साथ ही रायपुर के वरिष्ठ कवि रसिक बिहारी अवधिया छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह 'तोर मन लगय तब' का विमोचन आनन्दी सहाय शुक्ला डॉ. बल्देव के हाथों सम्पन्न किया गया । उक्त अवसर पर रायगढ़ के साहित्यकार एवं गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित हुए । एवं रसिक बिहारी अवधिया को उनकी सहाकृति के लिए बधाई दी ।

समाज को आगे बढ़ाने में जितना महिलाओं का योगदान है उतना ही पुरूषों का योगदान है महिलाओं को आगे लाने में उक्त विचार मुम्बई से पधारीं प्रो. डॉ. आशा पाटिल ने 'शिक्षा से महिला सशक्तिकरण' विषय पर रखे । जन शिक्षण संस्थान रायपुर छ.ग. के निदेशक तुहिन दबे ने आधार वक्तव्य और स्वागत भाषण दिया । अध्यक्षता की कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने विशिष्ट अतिथि डॉ. मृणालिका ओझा, आचार्य नर्मदा मिश्र नरम, डॉ. गुलाब सिंह, राजकमल नायक, शबाना आजमी, सुमन, शकुंतला तरार और बड़ी संख्या में रचनाकार श्रोता उपस्थित थे ।

नेशनल बुक ट्रस्ट के द्वारा एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन होटल अमित इंटरनेशनल में आयोजित किया गया था जिसमें छत्तीसगढ़ के प्रभारी लालित्य ललित..... जानकारी दी गई कि छत्तीसगढ़ के 27 जिलों के रचनाकारों के लिए यह एक सुखद अवसर है कि उन्हे NBT अपने साथ जोड़कर उनके द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पाण्डुलिपियों को प्रकाशित करेगा। इसी विषय पर विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किया साथ ही कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया जिनमें डॉ. सुशील त्रिवेदी, गिरीश पंकज लालित्य ललित संजय अलंग IAS विश्वरंजन पूर्व डीजीपी छत्तीसगढ़, जयप्रकाश मानस शकुंतला तरार, सुशील भोले अरुणेश शर्मा आदि ने कविताओं का पाठ किया। डॉ. सुधीर शर्मा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

छत्तीगढ़ हिन्दी साहित्य मण्डल द्वारा आयोजित कवि गोष्ठी में काव्य पाठ करती संध्या नलगुण्डवार.

रचनाएँ आमंत्रित

क्या आप कथाकार हैं या फिर गीत, ग़ज़ल कविता लिखते हैं? लघु कथा, संस्मरण, साक्षात्कार तो फिर देर किस बात की भेज दीजिए हमारे कार्यालय के पते पर या फिर ई मेल द्वारा भी आप हमें भेज सकते हैं।

E-mail : shakuntalatarar7@gmail.com

संपादक

''श्री सत्य कॉलेज ऑफ हायर एजूकेशन में सृजन सम्मान एवं काव्य समारोह का भव्य आयोजन''

मुरादाबाद। शनिवार, 29 मार्च 2014 श्री सत्य कॉलेज ऑफ हायर एजूकेशन, मुरादाबाद (उ प्र) की ओर से कॉलेज सभागार में सृजन सम्मान एवं काव्य समारोह का आयोजन किया गया। माँ वागीश्वरी के समक्ष मंगलदीप जलाकर जहाँ मुख्य अतिथि अमरोहा के एडीशनल जज श्री राज सिंह वर्मा, विशिष्ट अतिथि मुरादाबाद के डिप्टी कमिश्नर श्री अनुभव सिंह, अध्यक्ष श्री सत्य ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन्स के चेयरमैन श्री देवेन्द्र कुमार मलिक ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया, वहीं डी एल एड के छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के आयोजक डॉ सत्यवीर सिंह चौहान ने सृजन सम्मान एवं काव्य समारोह के प्रयोजन को रेखांकित कर उपस्थित सभी अतिथियों, साहित्यकारों का जोरदार स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

आमंत्रित साहित्यकारों को सृजन सम्मान कार्यक्रम के प्रथम सत्र में आमंत्रित कवियों को सम्मानित किया गया।

साहित्यकार डॉ धनञ्जय सिंह (ग़ाज़ियाबाद) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व. ठाकुर प्रसाद सिंह जी की स्मृति में बंशी और मादल पुरस्कार, श्री वीरेंद्र आस्तिक (कानपुर) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व राजेन्द्र प्रसाद सिंह जी की स्मृति में गीतांगिनी पुरस्कार, श्री निर्मल शुक्ल (लखनऊ) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व वीरेंद्र मिश्र जी की स्मृति में गीतम पुरस्कार, श्री कमलेश भट्ट कमल (बरेली) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व. रवीन्द्र भ्रमर जी की स्मृति में भ्रमर पुरस्कार, श्री राकेश चक्र (मुरादाबाद) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व डॉ शिवबहादुर सिंह भदौरिया की स्मृति में शिंजनी पुरस्कार, डॉ जगदीश व्योम (दिल्ली) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व रमेश रंजक की स्मृति में गीत विहग पुरस्कार, श्री रमाकांत (रायबरेली) को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व दिनेश सिंह की स्मृति में ढाई आखर पुरस्कार एवं डॉ अवनीश सिंह चौहान को ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व डॉ शम्भुनाथ सिंह की स्मृति में दिवालोक पुरस्कार से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर डॉ बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून) समारोह में उपस्थित नहीं हो सके, जिन्हें ख्यातिलब्ध साहित्यकार स्व उमाकांत मालवीय जी की स्मृति में राघव राग पुरस्कार दिया जाना था।

समारोह के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार मलिक ने सम्मानित साहित्यकारों एवं अतिथियों के आगमन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्य और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन बहुत जरूरी है। साहित्यकार समाज के सच्चे शुभचिंतक होते हैं और समाज को दिशा देते हैं। मुख्य अतिथि श्री राज सिंह वर्मा ने अपने उद्बोधन में डॉ सत्यवीर सिंह चौहान के साहित्यिक प्रयासों की सराहना की और कहा कि इस कॉलेज के प्राध्यापक एवं छात्र-छात्राओं की विनम्रता और साहित्यप्रेम प्रशंसनीय है। विशिष्ट अतिथि श्री अनुभव सिंह ने मुरादाबाद की धरती को प्रणाम करते हुए कहा कि मुरादाबाद की माटी में साहित्य सेवा का जो भाव दिखाई देता है वह श्लाघनीय है।

दूसरे सत्र में आमंत्रित कवियों ने काव्य पाठ किया। डॉ धनञ्जय सिंह (ग़ाज़ियाबाद) , श्री वीरेंद्र आस्तिक (कानपुर), श्री निर्मल शुक्ल (लखनऊ), श्री कमलेश भट्ट कमल (बरेली), श्री राकेश चक्र (मुरादाबाद), डॉ जगदीश व्योम (दिल्ली), श्री रमाकांत (रायबरेली) एवं डॉ अवनीश सिंह चौहान ने अपनी धारदार रचनाओं को प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

सदस्यता कूपन

मैं नारी का संबल पत्रिका की नियमित ग्राहक बनना चाहता चाहती हूँ।

एक प्रति	:	25 रुपये
द्विवार्षिक	:	200 रुपये
पंचवार्षिक	:	500 रुपये
आजीवन	:	2000 रुपये

विदेशों में – डाक व्यय सहित

शासकीय – डाक व्यय सहित

(जो लागू नहीं होता कृपया उसे काट दें)
(सरकारी खरीदी के लिए डाक खर्च सहित वार्षिक शुल्क 100 रुपये है।)
(कृपया बैंक चेक के द्वारा ही सदस्य बनें।)

कृपया ध्यान दें अपना डिमांड ड्राफ्ट केवल नारी का संबल को देय हो।

नाम सुस्पष्ट अक्षरों में :

पता :

पिन कोड :

दूरभाष :

मोबाईल :

(इस कूपन को काटिये और शुल्क सहित इस पते पर भेजिए।)

नारी का संबल मंगाने का पता
प्लॉट नं. 32, एकता नगर, सेक्टर-2,
गुढ़ियारी, रायपुर 492 009 (छ.ग.)

यह पत्रिका आपको कैसी लगी कृपया पत्र द्वारा अपने विचारों से हमें अवगत करें।